

03 मानव और प्रकृति के बीच हों गूढ़ सह-संबंध

06 भारत डॉक्टरों और नर्सों का निर्यात कर रहा है...

08 थाने से फरार यौन उत्पीड़न आरोपी आफताब के मौत के बाद झारखंड...

क्या आप जानते हैं दिल्ली परिवहन विभाग जो सभी कार्यों को करने में सर्वप्रथम रहता है वाहन आटो जांच केंद्र दिल्ली में क्यों नहीं शुरू कर रहा, जाने कुछ तथ्यों के आधार पर

दिल्ली परिवहन विभाग एक ऐसा विभाग जो दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों को कहीं से भी लूटने का मौका नहीं छोड़ता

पिकी कुंठू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। आप को लगता है कि यह इल्जाम हम बिना वजह लगा रहे हैं पर ऐसा नहीं है। हम को भी कभी यह लगता था कि परिवहन विभाग जो भी व्यवसायिक वाहन मालिकों पर नियम या पाबंदियां लगा रहे हैं वह जनहित में है। पर जब अत्यंत वाहन मालिकों ने इस पर विरोध जताया तो हमने इस बात की जांच करने का प्रयास किया और जांच में को तथ्य सामने आए उसे जानने की बाद साफ हो गया कि बड़े ही ढंग से परिवहन विभाग व्यवसायिक वाहन मालिकों के साथ दिल्ली की जनता को लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ता।

आज भारत देश में वाहनों की जांच के लिए आटो जांच केंद्र स्थापित हो गए हैं और आटो जांच केंद्र किसा भी राज्य में स्थापित हो उन्हें भारत देश में किसी भी राज्य में पंजीकृत वाहन की जांच करने की मान्यता प्राप्त है। ऐसा होने के बाद पता चला कि दिल्ली द्वारा वाहन जांच



के नाम पर व्यवसायिक वाहन मालिकों से कितनी लूट कि जा रही थी

1. दिल्ली में व्यवसायिक वाहन को जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए जांच फीस से अतिरिक्त पार्किंग फीस देने अनिवार्य हैं जो

आटो जांच केंद्र पर नहीं आई

2. दिल्ली में वाहन जांच अगर वाहन मालिक किसी भी कारण से समय पर नहीं करवा पाता तो जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए जमा कराई जाने वाली फीस का साथ

वाहन पंजीकरण फीस और 50 रुपये प्रतिदिन के अनुसार विलम्ब शुल्क जमा करवाना अनिवार्य किया हुआ है जब की आटो जांच केंद्र से जांच करवाते समय जांच प्रमाण पत्र फीस के अलावा कोई फीस नहीं ली जाती

3. दिल्ली में वाहन जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए वाहनों में वीएलटीडी संयंत्र लगा होना अनिवार्यता है पर आटो जांच केंद्र पर जांच कराने के लिए इसकी भी आवश्यकता नहीं है

4. दिल्ली में व्यवसायिक वाहन का जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए वाहन में स्पीड कंट्रोल डिवाइस का होना भी अनिवार्यता है पर आटो जांच केंद्र पर जांच कराने के लिए इसकी भी आवश्यकता नहीं है

इन सभी तथ्यों को देखते हुए साफ है की दिल्ली परिवहन विभाग दिल्ली में व्यवसायिक वाहन मालिकों से लूट के लिए कुछ भी कर सकती है।

डीसीबीए द्वारा सभी साथियों को महत्वपूर्ण सूचना....

परिवहन विशेष न्यूज

जैसा कि आप सभी जानते हैं, कि आपकी एसोसिएशन डी.सी.बी.ए. (DCBA) पिछले आठ वर्षों (2017 से) से पार्किंग समस्या को लेकर एमसीडी के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट में कानूनी लड़ाई लड़ रही है।

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि दिनांक 24/07/2025 को माननीय जस्टिस मनोज जैन जी द्वारा दिल्ली हाई कोर्ट में एक अहम आदेश पारित किया गया है।

कोर्ट का निर्देश: एमसीडी को आदेश दिया गया है कि वह:

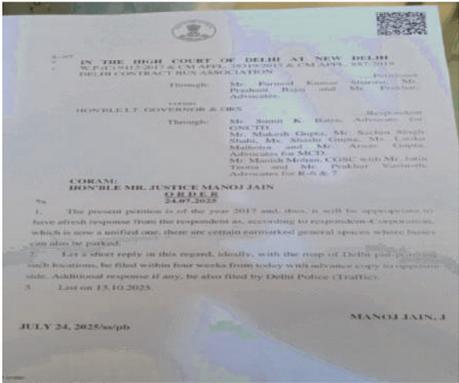
दिल्ली में buses के लिए जोन-वाइज पार्किंग स्थलों को चिन्हित करे..

और चार सप्ताह के भीतर इन स्थानों के नक्शे सहित पूरी रिपोर्ट अदालत में प्रस्तुत करे।

इस मुकदमे के दौरान..

हमारी अब तक की दो बड़ी सफलताएं:

1. पहली सफलता: एमसीडी



अब कोर्ट आदेश के कारण सड़कों से वाहन उठाना बंद करने पर मजबूर हुई।

2. दूसरी सफलता: आठ वर्षों के संघर्ष और सीनियर एडवोकेट्स की पैरवी के बाद, हाई कोर्ट ने जोन-वाइज पार्किंग व्यवस्था सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी सीधे एमसीडी को सौंप दी है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह

आदेश हमारे बस ऑपरेटर्स, टेंपो चालकों और पूरे व्यापार समुदाय के हित में सकारात्मक परिणाम लाएगा।

अब हम कोर्ट द्वारा निर्धारित रिपोर्ट और आगे की कार्यवाही का इंतजार करेंगे।

आप सभी का सहयोग और विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

टीम - डीसीबीए

कटक ओएमपी से कंदरपुर तक एलिवेटेड कॉरिडोर

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : कटक शहर में यातायात की समस्या और भीड़भाड़ को देखते हुए, ओएमपी चाक से कंदरपुर तक एक एलिवेटेड कॉरिडोर बनाने का निर्णय लिया गया है। यह जानकारी कटक लोकसभा सांसद भर्तृहरि महताब ने दी है। सांसद महताब ने कहा, इस परियोजना के संबंध में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से चर्चा हुई है विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार हो चुकी है और जल्द ही इसे मंजूरी मिल जाएगी। इस परियोजना का निर्माण कार्य अगले तीन महीनों में शुरू हो जाएगा। सांसद ने बताया कि इस एलिवेटेड कॉरिडोर के निर्माण पर लगभग 640 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इस परियोजना से कटक शहर में यातायात व्यवस्था सुगम होगी और ट्रैफिक जाम की समस्या कम होगी। इससे शहर के आर्थिक विकास में भी मदद मिलने की उम्मीद है।



हिसार हरियाणा में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी उपत्सा की हुई बैठक



परिवहन विशेष न्यूज

हिसार। हरियाणा में "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" - ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी उपत्सा की कई प्रमुख परिवहन संगठनों में लगातार सभाएं हुईं, इस सभा में राष्ट्रीय प्रभारी श्री रविंद्र बथानी जी ने मुद्दा उठाते हुए कहा कि रिंगल मोटर मालिक के साथ बीमा कंपनियों सदा ही दगाबाजीयां करती हैं, विभिन्न प्रकार के प्रलोभनों के द्वारा एजेंट इन निजी कंपनियों से बीमा तो करवाती है किंतु क्लेम/दावे के समय किसी ने किसी बहाने के द्वारा "नो क्लेम" की चिट्ठी भेज दी जाती है। गाड़ी की स्थिति आज के बाजार में बहुत ही दुविधा जनक व दयनीय है और उसमें इस तरह निजी कंपनियों का "नो क्लेम लेटर" सिरदद बना हुआ है इसलिए समस्त राष्ट्र के सभी गाड़ी मालिकों से अपील है की निजी कंपनियों से बीमा करवाना तत्काल बंद करें, मैं मानता हूँ कि कुछ दलाल संस्थाएं हैं जो इन निजी कंपनियों से मोटे कमीशन लेकर

भोले भाले सिंगल गाड़ी मालिकों को बड़ी-बड़ी मीटिंग करवाकर बीमा करवाने के लिए प्रेरित करते हैं किंतु हमें एक आवाज में इन निजी कंपनियों की बीमा खरीदनी बंद कर देनी चाहिए" राष्ट्रीय मालिक जी हिसार ने इन बातों को जोड़ते हुए कहा की "अपलो, एमआरएफ, जीके की जो टायर्स हैं उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से सभी तरह के जायज क्लेम को भी ठुकराने का अभ्यास बना लिया है, क्रैकिंग, ब्रिड छोड़ना, एक्सस घिसाई, थ्रेड छोड़ना जैसी समस्याओं का समाधान किये बिना ही क्लेम रिजेक्ट कर देते हैं इसलिए हम "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" के बैनर तले या आह्वान करते हैं कि पूरे देश के सभी गाड़ी मालिक खासकर सिंगल मोटर मालिक इन कंपनियों के टायर का खरीदी बंद करते हुए बायकाट करें व तत्काल इनकी खरीदारी बंद करें"

श्री महेंद्र सिंह जी "सिरसा" ने कहा कि

बेवजह गाड़ियों को बुलाकर फैक्ट्री, गोदाम व लॉडिंग पॉइंट में खड़े रखकर तीन-तीन चार-चार दिन तक लोड नहीं किया जाता और लोड हो जाने के बाद खाली करने में भी अनलॉडिंग पॉइंट पर तीन से चार दिन आमतौर पर लेबर, पेपर, पेमेन्ट, फैक्ट्री में मशीन ब्रेकडाउन का बहाना बनाकर गाड़ियां खड़ी करते हैं यह बिल्कुल गलत बात है हम इसका कड़ा विरोध करते हैं और ऐसे मामलों में जब तक भाड़ा बढ़ाकर नहीं दिया जाए तब तक गाड़ी खाली नहीं हानी चाहिए व ऐसे गोदामों, फैक्ट्री, लॉडिंग पॉइंट का हमें विरोध करना चाहिए

राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने सभी यूनियनों/संगठनों का धन्यवाद देते हुए कहा कि जो भी स्थानीय मुद्दे हैं वह सिर्फ स्थानीय ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के लिए राष्ट्रीय मुद्दे हैं व हम इसका भरपूर समर्थन करते हैं। इन सभी मांगों के आगे जोड़ते हुए कहा कि जिस तरह गाड़ी मालिकों



ने अपने गाड़ियों की बीमा करवा रखी है इस तरह माल भेजने वाले भी अपने सामानों का माल का बीमा करवाने का जिम्मा उठाने चाहिए बिना भी में क्लोड गाड़ियों की कोई जिम्मेदारी गाड़ी मालिकों की नहीं है वह नहीं होनी चाहिए नहीं करवा पाते हैं तो 200 प्रति टन गारंटी चार्ज के नाम पर माल भेजने वाले इस राशि का वहन करें किसी भी सूरत पर बिना माल व बिना गारंटी चार्ज के लोड किए गए माल के नुकसान व किसी तरह के टूट फूट की जिम्मेदारी न गाड़ी मालिकों को न ही ट्रांसपोर्टर्स की ही होगी। टोल, समान जी एस टी, डाला चार्ज (लॉडिंग-अनलॉडिंग), वन पॉइंट चेकिंग, पुलिस विभाग/आरटीओ/डिटीओ/खनन विभाग के मनमानी के खिलाफ संघर्ष- राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (उपत्सा) की प्रमुख प्राथमिकताएं रहेंगी बैठक में नरेश गोष्ठी, सुरेश नियाणा, सुनील शर्मा, विष्णु लाम्बा, राजू प्रधान प्रमुख रूप से मौजूद रहे।



हरियाली तीज :-



3- हरियाली तीज व्रत व पूजन विधान ---
 (1) प्रातःकालीन तैयारी -----
 * स्नान, स्वच्छता व पूजा स्थान की सजावट करें।
 * महिलाएँ हरी साड़ी, हरे चूड़ियाँ, मेंहदी लगाकर श्रृंगार करती हैं।
 * पूजा थाल में रखें ----- सोलह श्रृंगार, मिठाई, बेलपत्र, फल, द्रव्य, जलकलश आदि।
 (2) व्रत एवं पूजन विधि -----
 चरण/विधि -----
 * संकल्प/ " मैं माता गौरी की कृपा हेतु व्रत करती हूँ..."
 * पूजन/ मिट्टी की पार्वती माता की मूर्ति या चित्र की पूजा करें।
 * अर्घ्य/ जल, कुमकुम, चावल, अक्षत, रोली, फल अर्पित करें।
 * व्रत कथा/ हरियाली तीज व्रत कथा अवश्य पढ़ें या सुनें।
 * मंत्र -----
 ३ ॐ उमायै नमः ३, ३ ॐ गौरीपत्ये नमः ३ जप करें।
 * दीप आरती/ कपूर से आरती करें और " ॐ जय शिव-आँकला " गाएं।
 * भजन-नृत्य/ स्त्रियाँ लोक गीत गाती हैं: "तीज की रात विराजे शिव शंकर, गौरी संग डोली सजे..."
 (3) तीज व्रत नियम -----
 * यह निर्जला व्रत भी किया जाता है (भक्ति अनुसार)।
 * फलाहार या जल भी नहीं लेते जब तक पूजा पूर्ण न हो।
 * अंत में पति के हाथ से जल या प्रसाद ग्रहण कर व्रत पूर्ण किया जाता है।
 4- हरियाली तीज के प्रतीकात्मक भावार्थ -----
 तत्व/ अर्थ -----
 (1) हरा वस्त्र/ सौंदर्य, नवजीवन, सम्पन्न।
 (2) झूला झूलना/ प्रकृति संग आत्मा का लय।
 (3) मेंहदी लगाना/ प्रेम व शुभत्व का चिन्ह।
 (4) कथा सुनना/ शिव-पार्वती जीवन से शिक्षा लेना।
 (5) निर्जला व्रत/ तप, त्याग और प्रेम की पराकाष्ठा।
 5- हरियाली तीज की कथा -----
 सारांश (संक्षेप में)
 (1) माता पार्वती ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु 108 जन्मों तक कठोर तपस्या की।
 (2) 108वें जन्म में, उन्होंने घोर व्रत, ध्यान, और योग के माध्यम से, शिव को प्रसन्न किया।
 (3) श्रावण की शुक्ल तृतीया को, भगवान शिव ने उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया।
 (4) यह दिन " शिव-पार्वती के पुनर्मिलन " का पावन क्षण है।

भारतीय संस्कृति का एक अत्यंत सुंदर, भावनात्मक और आध्यात्मिक पर्व है। यह विशेष रूप से श्रावण शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व में पार्वती की कठोर तपस्या, शिव-पार्वती के दिव्य मिलन, और विवाहित स्त्रियों की सौभाग्य रक्षा के लिए समर्पित है।
 1- आध्यात्मिक महत्व -----
 (1) शिव-पार्वती संयोग का स्मरण -----
 * इस दिन माता पार्वती ने शिवजी को पति रूप में प्राप्त किया था, उनके 108 जन्मों की तपस्या पूर्ण हुई।
 * यह तिथि भक्ति, समर्पण और स्त्रीत्व की सिद्धि का प्रतीक है।
 2- तपस्या का प्रतीक -----
 यह पर्व दर्शाता है कि, आत्मा (पार्वती) जब तक विरह और साधना (तीज) से नहीं गुजरती, तब तक परमात्मा (शिव) से, उसका संयोग नहीं होता।
 (3) हरियाली = जीवन की आशा -----
 * श्रावण मास की हरियाली, वर्षा और प्रकृति - यह सब प्रेम, उर्वरता, नवजीवन और सौंदर्य का प्रतीक है।
 * यह ब्रह्मांडीय शक्ति के सृजन भाव की उपासना है।
 (4) सौभाग्य, प्रेम और समर्पण का पर्व
 * स्त्रियाँ इस दिन अपने पति की दीर्घायु, वैवाहिक सौख्य, और अखंड सौभाग्य के लिए व्रत रखती हैं।
 * कुमारी कन्याएँ योग्य पति प्राप्ति हेतु, इसे करती हैं।

हम हमेशा गुरुओं/ईष्ट से कुछ न कुछ चाहते/मांगते ही रहते हैं, कभी मौक्तिक/मानसिक/आध्यात्मिक...

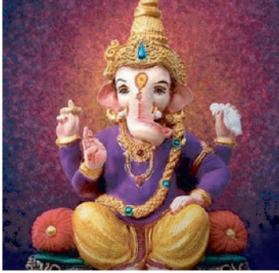
ऐसा नहीं कि हमारी कोई 'एक' मांग हो, और वह पूरी हो जाये तो हम प्रसन्न होकर धन्यवाद से भर जायेंगे। 'एक' मिले तो 'दूसरी' की आकांक्षा। 'दूसरी' अभी मिल ही रही हो कि तीसरी, फिर चौथी। मांगते-मांगते हम ही भूल जाते हैं कि हमने 'यह' मांगा था। कब/कैसे/क्यों मांगा था? अब तो वह मांगा हुआ सब असामयिक/इररिलेवेंट हो गया लेकिन फिर भी मांगें जारी हैं। हम कभी संत के निजी जीवन में झांक कर नहीं देखते कि उसने यह अवस्था कैसे प्राप्त की? हम केवल यह देखते हैं कि वो केवल देने वाले हैं, देते ही रहें। उनकी उस अंगिन को नहीं देख पाते जिसने उन्हें तपाया/पकाया/परिपक्व किया है। भीड़ और आडंबर से दूर रहते हैं वह सदगुरु। संत नहीं चाहते कि उनकी खूब तारीफ हो। समाज में उनका खूब नाम हो। अक्सर वह नाम, भीड़, प्रशंसा से बचना ही चाहते हैं। उन्हें नहीं जुटाने होते डेर सारे फॉलोवर। वह तो बस भाव देखते हैं और ब्रह्मांड से उतर मिल जाता है। और यदि संतो की तारीफों



के पुल बांध भी दिए तो इससे होगा क्या? सुनने वालों का तो आत्मज्ञान की तरफ लक्ष्य हो, संत तो केवल यही चाहते हैं। विरले ही होते हैं उनको सुनने/समझने/जानने वाले, जो शरीर और मन के ऊपर उठ कर सोच पाते हैं। यदि हमारे भीतर आत्मज्ञान को तीव्र अंगिन नहीं होगी तो संतो का हमारे जीवन में आने का लक्ष्य ही सध नहीं पाएगा। यदि उनको, उनकी बातों, उनका ज्ञान ग्रहण करने की दृष्टि/उत्कंठा ही हमारे पास न हो तो हम समझ नहीं सकते। चिकने घड़े की भाँति छूकर भी अछूते ही रह जायेंगे और यह जीवन ऐसे ही व्यर्थ/व्यतीत हो जायेगा।

व्रत चतुर्थी व्रत आज

प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि भगवान गणेश को समर्पित माना जाता है। इस शुभ अवसर पर भगवान गणेश की भक्ति भाव से पूजा की जाती है। साथ ही भगवान गणेश के निमित्त चतुर्थी का व्रत रखते हैं। इस व्रत को करने से साधक के आय और सौभाग्य में वृद्धि होती है और सभी प्रकार के संकटों से मुक्ति मिलती है। साधक हर महीने चतुर्थी तिथि पर भक्ति भाव से भगवान गणेश की पूजा करते हैं। इसके साथ ही चतुर्थी तिथि पर दान-पुण्य भी किया जाता है।
विनायक चतुर्थी शुभ मुहूर्त



वैदिक पंचांग के अनुसार, सावन माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 27 जुलाई को देर रात 10 बजकर 41 मिनट पर शुरू होगी। वहीं, 28 जुलाई को देर रात 11 बजकर 24 मिनट पर चतुर्थी तिथि समाप्त होगी। तिथि गणना से 28 जुलाई को विनायक चतुर्थी मनाई जाएगी।
विनायक चतुर्थी शुभ योग

करने से जीवन में आ रहे तमाम कष्टों से मुक्ति भी मिलती है। कहा जाता है कि भगवान गणेश विघ्नहर्ता हैं, इनकी उपासना से किसी भी कार्य में आ रही रुकावट दूर हो जाती है। इतना ही नहीं विनायक चतुर्थी पर भगवान गणेश की भक्ति करने से व्यापार में भी वरकत होती है। इसलिए हमारे शास्त्र में विनायक चतुर्थी की महिमा का बेहद महत्व है।
विनायक चतुर्थी की पूजा विधि

ज्योतिषियों की मानें तो सावन माह की विनायक चतुर्थी पर दुर्लभ परिध योग का संयोग बन रहा है। हर्षण योग का संयोग रात भर है। साथ ही रवि योग का भी संयोग है। रवि योग सुबह 05 बजकर 40 मिनट से लेकर शाम 05 बजकर 35 मिनट तक है। इन योगों में स्नान-ध्यान कर भगवान गणेश की पूजा करने से आरोग्य जीवन का वरदान मिलेगा। साथ ही सभी प्रकार के शुभ कामों में सफलता मिलेगी।
क्यों मनाते हैं विनायक चतुर्थी?

भगवान गणेश की सच्चे मन से आराधना करने से सभी परेशानियों का निवारण होता है और ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
 यह व्रत भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। इस दिन मध्याह्न के समय में श्री गणेश का पूजन करने से सुख-समृद्धि, धन-वैभव, ऐश्वर्य और संपन्नता मिलती है।
 विनायक चतुर्थी के शुभ दिन पर प्रातः काल स्नानादि करके लाल या पीले वस्त्र पहन लें।
 अब पूजा स्थल पर पीला या लाल कपड़ा बिछाकर भगवान गणेश जी की मूर्ति स्थापित करें। उसके बाद उन्हें सिंदूर का तिलक लगाएं। अब उन्हें दूर्वा, फल, फूल उनकी चरणों में अर्पित करें। इसके बाद उन्हें लड्डूओं का भोग लगाएं। फिर दीपक जलाकर भगवान गणेश की आरती करें। इसके बाद गणेश जी के मंत्रों का जाप करें।
 अंत में भगवान गणेश को प्रणाम कर प्रसाद वितरण करें और पूरे दिन फलाहारी व्रत रखकर अगले दिन पंचमी तिथि में व्रत का पारण करें।
विनायक चतुर्थी पर इन बातों का रखें विशेष ध्यान

हिंदू धर्म में भगवान गणेश को प्रथम पुत्र्य देवता माना गया है। किसी भी शुभ कार्य, यज्ञ, विवाह या धार्मिक अनुष्ठान की शुरुआत से पहले श्री गणेश की पूजा की जाती है ताकि कार्य निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सके। हर महीने शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को विनायक चतुर्थी कहा जाता है, जो विशेष रूप से भगवान गणेश को समर्पित होती है।
विनायक चतुर्थी का महत्व

मान्यता है कि विनायक चतुर्थी पर भगवान गणेश की पूजा भवना करने से व्यक्ति को ज्ञान और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। इसके साथ ही उनकी आराधना

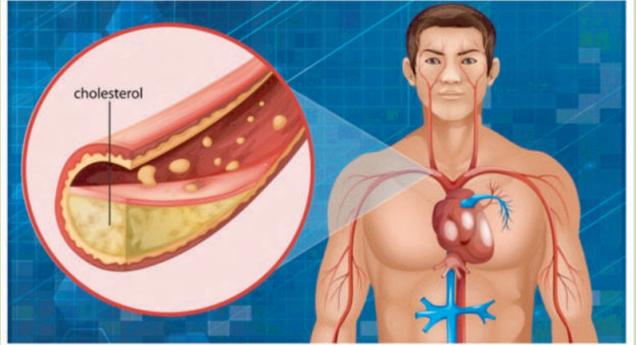
विनायक चतुर्थी के दिन चंद्र दर्शन करने की मनाही होती है। मान्यताओं के अनुसार, विनायक चतुर्थी को चंद्रदर्शन करने से जीवन में कलंक लगता है। इसलिए इस दिन चंद्रमा के दर्शन करने से बचें। इसके अलावा तुलसी का प्रयोग गणेश जी की पूजा में नहीं करना चाहिए। कहा जाता है कि ऐसा करने से भक्त गणेश जी के क्रोध के भागी बन सकते हैं।
 वहीं विनायक चतुर्थी के दिन जब गणेश जी की स्थापना घर पर करें तब उनको अकेला न छोड़ें, घर पर कोई न कोई अवश्य होना चाहिए।
 वहीं गणेश जी की स्थापना करते वक्त ध्यान रखें कि उनकी पीठ का दर्शन न हो। पीठ का दर्शन करने से दरिद्रता आती है।
 ध्यान रहे कि गणेश जी की पूजा में जब आप कोई दीपक जलाते हैं, तो उस दीपक के स्थान को बार-बार न बदलें और न ही उस दीपक को गणेश जी के सिंहासन पर रखें।
 साथ ही विनायक चतुर्थी व्रत के दिन इस बात का विशेष ख्याल रखें कि फलाहार में नमक का सेवन न करें। विनायक चतुर्थी के दिन काले वस्त्र ना पहने क्योंकि काले रंग को नकारात्मकता का प्रतीक मानते हैं।
 इतना ही नहीं इस दिन अगर भक्त व्रत रख रहे हैं तो किसी के भी लिए भी अपशब्दों का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए। ऐसा करने से व्रत का पुण्य नहीं मिलता है।
 वैसे तो कभी भी बड़ों का अपमान नहीं करना चाहिए, लेकिन विनायक चतुर्थी के दिन खासतौर पर इस बात का ध्यान रखें, वरना पूजा का फल नहीं मिलेगा। और विनायक चतुर्थी पर किसी से कोई झगड़ा या मारपीट न करें।
विनायक चतुर्थी पर करें ये उपाय, दूर होंगे सभी कष्ट

गणेश जी को दूर्वा बहुत प्रिय है। इसलिए दूर्वा अर्पित करें।
 गणेश स्तोत्र का पाठ करने से मन शांत होता है और लंबे बढती है।
 लाल रंग गणेश जी को प्रिय है। इसलिए लाल पुष्प अर्पित करें।

गणेश जी को दूर्वा बहुत प्रिय है। इसलिए दूर्वा अर्पित करें।
 गणेश स्तोत्र का पाठ करने से मन शांत होता है और लंबे बढती है।
 लाल रंग गणेश जी को प्रिय है। इसलिए लाल पुष्प अर्पित करें।

गणेश जी को दूर्वा बहुत प्रिय है। इसलिए दूर्वा अर्पित करें।
 गणेश स्तोत्र का पाठ करने से मन शांत होता है और लंबे बढती है।
 लाल रंग गणेश जी को प्रिय है। इसलिए लाल पुष्प अर्पित करें।

कोलेस्ट्रॉल



हमारा हृदय कई कार्यों को करने के लिए जाना जाता है। हृदय को स्वस्थ रखने और हृदय रोगों के जोखिम से दूरी बनाने के लिए कई कारकों पर ध्यान देना चाहिए। उन्हीं में से एक है कोलेस्ट्रॉल (Cholesterol), जिसके स्तर को नियंत्रित करना बेहद आवश्यक है। इसे नियंत्रित करने के लिए स्वस्थ जीवनशैली के साथ-साथ कोलेस्ट्रॉल कम करने के उपाय भी कारगर साबित हो सकते हैं।
 कोलेस्ट्रॉल बढ़ने पर शरीर देता है ये संकेत, समय पर पहचान लें वरना जान से हाथ धोना पड़ सकता है।
 आज की आलस भरी लाइफस्टाइल, अनहेल्थी फूड और स्मॉकिंग-ड्रिंक जैसी आदतों के चलते युवाओं में भी कोलेस्ट्रॉल की समस्या देखी जा रही है। बाँड़ी में यदि कोलेस्ट्रॉल का लेवल बढ़ जाए तो हार्ट से जुड़ी दिक्कतें हो सकती हैं।
 शरीर में पाया जाने वाला कोलेस्ट्रॉल एक मोम जैसा पदार्थ होता है। ये लीवर से बनता है। कोलेस्ट्रॉल भी दो प्रकार के होते हैं।
 गुड़ कोलेस्ट्रॉल और बैड कोलेस्ट्रॉल। इसमें बैड कोलेस्ट्रॉल हमारी आर्टीज में जमकर बीमारियाँ पैदा करता है।
 यदि कोलेस्ट्रॉल के लेवल को अधिक बढ़ने से पहले सही इलाज लिया जाए तो इसके नुकसान को टाला जा सकता है। जब शरीर का कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है तो हमारी बाँड़ी कई संकेत देती है। आप इन संकेतों को पहचान कर अपना कोलेस्ट्रॉल टेस्ट करवा सकते हैं। फिर डॉक्टर से इलाज लेकर इसे कंट्रोल में रख सकते हैं।
कोलेस्ट्रॉल बढ़ने के संकेत
1 पैरों का सुन्न पड़ना
 कभी-कभी आप न देखे जा सकने वाले पैर अचानक सुन्न पड़ जाते हैं। ऐसा हाई कोलेस्ट्रॉल (High Cholesterol) के चलते होता है। दरअसल कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से नसों में ब्लॉकज हो जाता है। इससे खून की सप्लाई कम हो जाती है या पूरी तरह रुक जाती है।
2 दिल का दौरा पड़ना
 कोलेस्ट्रॉल का लेवल हाई होने से आर्टीज में ब्लॉकज उत्पन्न हो जाता है। यह स्थिति हार्ट अटैक (Heart Attack) लाती है। इसलिए

अपने कोलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल में रखना दिल की सेहत के लिए अच्छा होता है।
3. हाई ब्लड प्रेशर
 कोलेस्ट्रॉल लेवल बढ़ने से शरीर का उच्च रक्त चाप यानि High Blood Pressure भी बढ़ता है। इसलिए आप बीपी मशीन से हर महीने या 15 दिन में ब्लड प्रेशर मापते रहें। इससे आपको कोलेस्ट्रॉल के खतरों का संकेत मिल जाएगा।
4 * नाखून का रंग बदलना
 आपके नाखूनों का कलर चेंज होना भी हाई कोलेस्ट्रॉल का एक संकेत होता है। दरअसल ब्लड में बैड कॉलेस्ट्रॉल के अधिक बढ़ने से धमनियाँ ब्लॉक होने लगती हैं। इसमें खून की सप्लाई कम हो तो आपके गुलाबी नाखून पीले दिखने लगते हैं।
5 * बेचेनी *
 सुन्न लेने में तकलीफ होना, जो मिचलाना, थकावट, सीने में दर्द बढ़ना, बेचेनी होना भी बड़े हुए कोलेस्ट्रॉल की निशानी है। ये लक्षण दिखने पर तुरंत आपको कोलेस्ट्रॉल की जांच कराना चाहिए।
ऐसे रोकें कोलेस्ट्रॉल को बढ़ने से
 कोलेस्ट्रॉल का लेवल कम करने के लिए आप कई तरीके अपना सकते हैं। सबसे पहले तो आप अपनी डाइट में सैचुरेटेड फैट की जगह अनासैचुरेटेड फैट्स लें। जैसे ऑलिव ऑयल,

सूरजमुखी के तेल, नट्स और सीड्स ऑयल जैसी चीजों में हेल्दी फैट पाया जाता है।
 इसके अतिरिक्त आप रोज व्यायाम कर भी अपने कोलेस्ट्रॉल का स्तर कम कर सकते हैं।
 कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए, आप अपनी डाइट और लाइफस्टाइल में बदलाव कर सकते हैं।
खान-पान में बदलाव
 शाकाहारी भोजन करें. बीन्स, दाल, टोफू, नट्स, फल, सब्जियाँ, और कम वसा वाले डेयरी उत्पाद खाएं।
 सोयाबीन, फाइबर सप्लीमेंट, सेब, अंगूर, सूरजमुखी, और केनोला जैसे वैजेटेबल ऑयल खाएं।
 लहसुन, करक्यूमिन, अदरक, काली मिर्च, धनिया, और दालचीनी जैसे मसाले खाएं।
 शारीरिक गतिविधियों में बदलाव नियमित रूप से एक्सरसाइज करें।
 हफ्ते में पांच दिन 30 मिनट मॉडरेट फ्रिजिकल एक्टिविटी करें।
 हफ्ते में तीन बार 20 मिनट एरोबिक एक्टिविटी करें।
अन्य बदलाव
 धूम्रपान न करें, शराब का सेवन कम करें, वजन कम करें।
 ये लक्षण दिखने पर तुरंत आपको कोलेस्ट्रॉल की जांच कराना चाहिए एवं डॉ. की सलाह लें।

दिल्ली विश्वविद्यालय में 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत - अखंड भारत' विषयक विशेष कार्यक्रम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज
नई दिल्ली। मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं जम्मू और कश्मीर पीपल्स फोरम के संयुक्त तत्वाधान में कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में 28 जुलाई, 2025 को दोपहर 2:30 बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के कन्वेंशन हॉल में 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत - अखंड भारत' विषयक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। डॉ. जितेंद्र सिंह, राज्यमंत्री, प्रधानमंत्री कार्यालय एवं अन्य विविध मंत्रालय, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. योगेश सिंह करेंगे।
 कार्यक्रम के संयोजक और मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. निरंजन कुमार ने बताया कि कुलपति प्रो.

योगेश सिंह के संरक्षण में मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति लोगों में भारतीय मूल्य, भारत-बोध एवं देशभक्ति जैसे भाव विकसित करने के लिए समर्पित है।
 प्रो. कुमार ने कहा कि 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत - अखंड भारत' विषयक कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी उच्च पदाधिकारियों सहित विभागाध्यक्ष, प्राचार्य, संकाय सदस्य, शिक्षक, शोधार्थी, छात्र और समाज के अन्य गणमान्य लोग भी शामिल होंगे।
— प्रो. निरंजन कुमार

मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय
 जम्मू और कश्मीर पीपल्स फोरम
 के संयुक्त तत्वाधान में
कारगिल विजय दिवस - 2025
 के उपलक्ष्य में आयोजित
एक भारत - श्रेष्ठ भारत - अखंड भारत
 विषयक कार्यक्रम में अग्रणी प्रतिभागी अतिथि (संयोजक) हैं।

मुख्य अतिथि
डॉ. जितेंद्र सिंह
 माननीय राज्यमंत्री, प्रधानमंत्री कार्यालय व कार्मिक, लोक शिकायत एवं पंचायत मंत्रालय

अध्यक्ष
प्रो. योगेश सिंह
 माननीय कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय

संयोजक
प्रो. निरंजन कुमार
 अध्यक्ष, मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय

अतिथि
श्री अशोक पाण्डेय
 विशेषज्ञ (सं.स.)

संयोजक
श्री महेन्द्र मेहता
 अध्यक्ष, जम्मू और कश्मीर पीपल्स फोरम

संयोजक
डॉ. निरंजन कुमार
 अध्यक्ष, मूल्य संवर्धन पाठ्यक्रम समिति, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिनांक: 28 जुलाई, 2025 समय: अपराह्न 02:30 बजे
 स्थान: कन्वेंशन हॉल (सी.सी. ऑडिटरियम)
 दिल्ली विश्वविद्यालय

कारगिल युद्ध और समीक्षा समिति की विरासत: अग्निवीर नीति के आलोक में

जयसिंह रावत
 1999 का कारगिल युद्ध भारतीय इतिहास में एक निर्णायक क्षण बनकर उभरा। इस संघर्ष में जहां भारतीय जवानों की वीरता को स्मर कर दिया, वहीं देश की सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियों को भी बेकाबू किया। इस युद्ध के बाद स्थापित कारगिल समीक्षा समिति (Kargil Review Committee - KRC) ने भारत की रक्षा नीति, युद्धकला व्यवस्था, सेव्य सम्बन्ध और अर्थात् नीति में व्यापक सुधारों की सिफारिश की थी। वर्तमान में 'अग्निवीर योजना' को लागू किया गया है तो यह समझना आवश्यक है कि क्या यह योजना कारगिल युद्ध की सीखों से प्रयत्नी है या नरसे विफल का संकेत देती है।
कारगिल युद्ध की पृष्ठभूमि और सुरक्षा व्यवस्था की परीक्षा
 कारगिल युद्ध पाकिस्तान द्वारा किए गए एक पूर्व निर्धारित सेव्य प्रयोजन का परिणाम था, जिसमें निर्यंत्रण रेखा पर कर भारत की रणनीतिक ऊँचाइयों पर कब्जा करने की कोशिश की गई। प्रारंभिक युद्धिया विफलताओं और सीमा विचलन की युद्धों ने इस युद्ध को संभव बनाया। युद्ध की समाप्ति के बाद देश के सामरिक ढांचे की समीक्षा के लिए KRC का गठन हुआ, जिसने कई ऐतिहासिक सिफारिशें प्रस्तुत कीं। इन सिफारिशों में सेव्य बलों के पुनर्गठन, शॉर्ट सर्विस कमीशन के विस्तार, पैरा-मिलिट्री बलों से सम्बन्ध और सीमा विचलन के सम्बन्ध में सुझाव शामिल थे। यही सब बिंदु हैं, जहाँ से वर्तमान अग्निवीर योजना का वैचारिक और प्रशासनिक मूल्यंकन किया जाना चाहिए।
अग्निवीर योजना: संदेश, संरचना और चुनौतियाँ
 अग्निवीर योजना, जिसे सरकार ने 2022 में लागू किया, भारतीय सशस्त्र बलों में सेव्यकों की अर्थात् के पारंपरिक ढांचे को पूरी तरह बदलने का प्रयास है। इस योजना के अंतर्गत युवाओं को मात्र चार वर्षों के लिए भर्त किया जाता है जिसमें से केवल 25% को मॉर्बिड में स्थानीय सेव्य में रखना जाना जबकि 75% को सेव्य के बाद समाज में पुनर्स्थापित होना होगा। इस योजना के पीछे सरकार का तर्क है कि इससे सेव्य की श्रौतस्त प्रयुक्त कम होंगी, सेव्य में कर्जा और युद्धी बनी रहेंगी, और खा बन्ध पर पैशन का भार घटेगा तैक, इस तर्क को KRC की दृष्टि से परखना आवश्यक है।

KRC ने सेव्य में पुनर्गठन को सिफारिश तो किया था लेकिन उसने जवानों की बहुत छोटी सेवा अवधि या बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण विद्युत्कार्यों का सुझाव नहीं दिया था। समिति ने स्पष्ट रूप से कहा था कि सेव्य में अर्थात् को व्यावसायिक और शैक्षी स्वरूप लाने चाहिए ताकि उन्हें कोशत, सम्पन्न और मोबाइल बना सके।
 इसके विपरीत, अग्निवीर योजना में अर्थात् प्रक्रिया को एक 'सिफारिश अनुसंधान योजना' में बदला गया है जिससे न केवल सेव्यकों का दीर्घकालीन प्रशिक्षण बाधित होगा बल्कि एक अनुसंधान, प्रतिबद्ध और शैक्षी बत का निर्माण भी कठिन हो जाएगा।
रक्षणीय सुरक्षा और नवोन्मत्त पर प्रभाव
 सेव्य को सामान्य नौकरी नहीं बल्कि एक जीवन भर की परीक्षा देती है। चार साल की सेवा के बाद अगर 75% सेव्यकों को छोड़ दिया जाता है, तो इससे न केवल उन्हें अनुसंधान की मानवा पैदा होगी, बल्कि इसका प्रभाव उनके ऊँचाइयों पर कब्जा करने की कोशिश की गई। प्रारंभिक युद्धिया विफलताओं और सीमा विचलन की युद्धों ने इस युद्ध को संभव बनाया। युद्ध की समाप्ति के बाद देश के सामरिक ढांचे की समीक्षा के लिए KRC का गठन हुआ, जिसने कई ऐतिहासिक सिफारिशें प्रस्तुत कीं। इन सिफारिशों में सेव्य बलों के पुनर्गठन, शॉर्ट सर्विस कमीशन के विस्तार, पैरा-मिलिट्री बलों से सम्बन्ध और सीमा विचलन के सम्बन्ध में सुझाव शामिल थे। यही सब बिंदु हैं, जहाँ से वर्तमान अग्निवीर योजना का वैचारिक और प्रशासनिक मूल्यंकन किया जाना चाहिए।
अग्निवीर योजना: संदेश, संरचना और चुनौतियाँ
 अग्निवीर योजना, जिसे सरकार ने 2022 में लागू किया, भारतीय सशस्त्र बलों में सेव्यकों की अर्थात् के पारंपरिक ढांचे को पूरी तरह बदलने का प्रयास है। इस योजना के अंतर्गत युवाओं को मात्र चार वर्षों के लिए भर्त किया जाता है जिसमें से केवल 25% को मॉर्बिड में स्थानीय सेव्य में रखना जाना जबकि 75% को सेव्य के बाद समाज में पुनर्स्थापित होना होगा। इस योजना के पीछे सरकार का तर्क है कि इससे सेव्य की श्रौतस्त प्रयुक्त कम होंगी, सेव्य में कर्जा और युद्धी बनी रहेंगी, और खा बन्ध पर पैशन का भार घटेगा तैक, इस तर्क को KRC की दृष्टि से परखना आवश्यक है।

की अवधि, पैशन और परिपक्वता को बनाए रखने का सम्बन्ध किया। समिति ने बार-बार बत दिया था कि सेव्यकों को सेव्य के पश्चात पैरा-मिलिट्री बलों में सम्मिलित करने की नीति अर्थात् जाए जिससे सेव्य और अन्य सुरक्षा पेशेवरों दोनों को लाभ मिले।
 लेकिन अग्निवीर योजना में यह प्रक्रिया न तो सुनिश्चित है, न वाक्यकारी। इस कारण अग्निवीरों की सामाजिक सुरक्षा और प्रबंधकीय चिंताओं से प्रेरित लगती है।
सामाजिक प्रभाव और सेव्य संस्कृति पर संकेत
 सेव्य केवल एक सेव्य ढांचा नहीं, बल्कि एक दीर्घकालीन संस्कृति, अनुशासन और परंपरा का वास्तुक लेती है। अग्निवीरों की अर्थात् यदि चार वर्षों के लिए सेव्यी तो वे उस सेव्य संस्कृति को प्राप्त करना नहीं कर पायेंगे, जो सेव्य की रीढ़ मानी जाती है। इसके अलावा, जो सैनिक सेव्य के बाद बाहर होंगे, यदि उन्हें समुचित पुनर्वास नहीं मिलता, तो यह समाज में अस्तोष और अस्थिरता को भी जन्म दे सकता है। सेव्य से निकले हुए प्रशिक्षित युवा यदि निराशा और बेरोजगारी में गटकते हैं, तो यह प्रारंभिक सुरक्षा के लिए भी खतरा बन सकता है।
 कारगिल युद्ध और कारगिल समीक्षा समिति की रिपोर्ट में भारत को यह सिखाया कि सुरक्षा केवल युद्धक्षेत्र की बात नहीं होती, यह युद्धकला व्यवस्था, सैनिक मानसिकता, सम्बन्ध और नीति की व्यापक संरचना से जुड़ी होती है। अग्निवीर योजना इस युद्धकला के अंग नाम प्रतीत लेती है जो सेव्यकों को 'सेव्य' के बजाए से देव्यी है, न कि एक समर्पित, प्रशिक्षित और दीर्घकालीन सुरक्षा संरचना के हिस्से के रूप में। कारगिल की सीख थी - सैनिकों में भरोसा, दीर्घकालिक सेवा, मूल्य प्रशिक्षण और स्पष्ट मॉर्बिड। अग्निवीर योजना इन मूल्यों की परीक्षा ले रही है। यदि इसे कारगर बनाना है तो इसके साथ एक सुनिश्चित पुनर्वास नीति, अग्निवीरों की व्यवस्था की रचना, और सेव्य संस्कृति में दीर्घकालिक निष्ठा की व्यवस्था की जानी चाहिए अर्थात्, यह योजना उम्मीद सेव्यकों को अग्निवीर बनें बल्कि असमंजस और अनुसंधान के मार्ग पर छोड़ देती और यह भारत जैसे देश की सामरिक दृष्टि के लिए खतरों की घंटी बनेगी।

मानव और प्रकृति के बीच हों गूढ़ सह-संबंध (28 जुलाई विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर विशेष)

पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आज के समय में बहुत ही आवश्यक हो गया है, क्यों कि आज धरती से जंगल, वन्य जीव-जंतु, विभिन्न प्रजातियाँ लगातार कम होते चले जा रहे हैं और हमारा पर्यावरण लगातार विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से ओतप्रोत होता चला जा रहा है। बढ़ते विकास, शहरीकरण, वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण ग्लोबल वार्मिंग, जैव-विविधता की हानि, पानी की कमी और जलवायु परिवर्तन जैसी अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं।

प्रकृति संरक्षण दिवस व इसकी थीम - स्थिर और स्वस्थ समाज को बनाए रखने के लिए आज पर्यावरण और इसके संसाधनों (पानी, हवा, मिट्टी, खनिज वन, सूर्य का प्रकाश, जीव-जंतु, जीवाश्म ईंधन आदि) का संरक्षण बहुत आवश्यक है। इसी क्रम में हर वर्ष हम 28 जुलाई को 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' मनाते हैं। यहाँ पाठकों को बताता चलूँ कि 5 अक्टूबर 1948 को फ्रांस के एक छोटे से शहर फॉन्टेनब्ल्यू में प्रकृति संरक्षण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ की स्थापना की गई थी। वास्तव में यह दिवस हमारे धरती के पारिस्थितिक तंत्रों की सुरक्षा के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व पर बल देने के रूप में मनाया जाता है। कौनसा गलत नहीं होगा कि यह एक आह्वान है जो आमजन, समुदायों और सरकारों से हमारे नीले ग्रह (धरती) की भलाई सुनिश्चित करने वाली स्थायी प्रथाओं की दिशा में सक्रिय कदम उठाने का

आग्रह करता है। यदि हम प्रकृति, हमारी धरती, इसके पारिस्थितिकी तंत्र, जीव-जंतुओं, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, पेड़-पौधों, हमारे विभिन्न जल तंत्रों (नदियों, झीलों, तालाबों आदि) का समय रहते संरक्षण नहीं करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हमें कोसेंगीं और हमारे जीवन का आधार नहीं बचेगा। वास्तव में यह दिवस प्रकृति के संरक्षण और वर्तमान व भविष्य की पीढ़ियों की भलाई सुनिश्चित करने के बारे में जागरूकता बढ़ाने का दिवस है। संक्षेप में कहें तो यह दिवस 'मानव और प्रकृति' की परस्पर निर्भरता को स्वीकार करता है। हर साल इस दिवस की एक थीम या विषय रखा जाता है। मसलन, 2024 का थीम 'लोगों और पौधों को जोड़ना, वन्यजीव संरक्षण में डिजिटल नवाचार की खोज करना' रखा गया था। इस वर्ष 2025 का विषय 'पुनर्स्थापना, लचीलापन और जिम्मेदारी' रखा गया है।

संसाधन प्रबंधन, अपशिष्टों में कमी व पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकी पर ध्यान: - एक स्वस्थ समाज की नींव एक स्वस्थ वातावरण और हमारी प्रकृति है। सच तो यह है कि प्रकृति ही हमारे जीवन का प्रमुख आधार है। इसके बिना मनुष्य जीवित रहना नामुमकिन है। ऑक्सीजन, पानी और भोजन मानवीय जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं, लेकिन ये हमें तब आसानी से प्राप्त होंगी जब हम प्रकृति का संरक्षण करेंगे, लेकिन मानव ने अपने स्वार्थ के लिए इसका

विनाश करना जारी रखा है और इसका परिणाम वर्तमान में हमें भुगतान पड़ रहा है। अतः हमें यह चाहिए कि हम प्राकृतिक संसाधनों का सीमित व विवेकपूर्ण उपयोग करें और धरती के पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित करने की दिशा में आवश्यक और जरूरी कदम उठाएँ। हम प्रकृति के संरक्षण, इसके सर्वोत्तम उपयोग की नीतियाँ बनाएँ और प्रकृति के संरक्षण के लिए हमारा व्यवहार हमेशा जिम्मेदाराना होना चाहिए। आज जरूरत इस बात की है कि हम धरती पर संकटग्रस्त प्रजातियों और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ। वनों, आर्द्रभूमियों (वेटलैंड्स) और मोटे पानी के आवासों जैसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिक तंत्रों की बहाली और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करें। आज पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों को बढ़ावा देने, हमारे उपभोग पैटर्न पर ध्यान देने, धरती से कार्बन उत्सर्जन को कम करने की जरूरत है। दूसरे शब्दों में कहें तो जलवायु परिवर्तन की समस्या से से निपटने के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने और बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल ढलने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। प्राकृतिक संसाधनों की दीर्घकालिक व्यवहार्यता

वास्तव में तभी सुनिश्चित की जा सकती है जब हम कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन और उद्योग में स्थायी प्रथाओं को अपनायेंगे और जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन, विभिन्न अपशिष्टों में कमी के साथ ही साथ पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना सुनिश्चित करेंगे। वृक्षारोपण अभियान, पुनर्वनीकरण, सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई पर भी हमें ध्यान देना होगा। पर्यावरण संरक्षण पर कार्यशालाएँ और सेमिनार, स्कूल आउटरीच कार्यक्रम और संरक्षण विषयों को बढ़ावा देने वाले वेबिनार आयोजित किए जाने की आवश्यकता भी महती है।

केवल प्रतीकात्मक उत्सव तक सीमित नहीं रहे प्रकृति संरक्षण दिवस:- बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण व विकास की गतिविधियों के कारण आज हमारे वन, आर्द्रभूमियाँ और घास के मैदान कृषि भूमि और शहरी बस्तियों में बदल रहे हैं, यह अत्यंत चिंताजनक बात है। हमें धरती पर से 'प्लास्टिक प्रदूषण' को हर हाल में कम करना होगा, क्यों कि पर्यावरण का सबसे बड़ा दुश्मन प्लास्टिक ही है। यहाँ पाठकों को बताता चलूँ कि साल 2025 विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 'प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करना' ही रखी गई थी। धरती को साफ और स्वच्छ बनाने के लिए हमें अपशिष्टों का सही प्रबंधन करना होगा। आज जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास, वनों की कटाई, प्रदूषण और आवास विनाश न केवल वन्यजीवों और

पारिस्थितिक तंत्रों के लिए, बल्कि मानव स्वास्थ्य, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे समग्र जीवन स्तर के लिए एक बड़ा व गंभीर खतरा है। हमें प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और अपने पारिस्थितिक पदचिह्न को कम करके मानवता और पर्यावरण के बीच एक अधिक लचीला और सामंजस्यपूर्ण संबंध बना सकते हैं, लेकिन इसके लिए हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता व सामूहिकता से काम करना होगा। कहना गलत नहीं होगा कि संरक्षण एक सामूहिक प्रयास है, अकेला व्यक्ति, सरकार या कोई संस्था विशेष अकेले कुछ भी नहीं कर सकता है। वास्तव में, पर्यावरण/प्रकृति संरक्षण के लिए व्यक्तियों, समुदायों, व्यवसायों और सरकारों की सक्रिय भागीदारी बहुत ही आवश्यक व जरूरी है। शिक्षा, जागरूकता अभियान और समुदाय-आधारित संरक्षण जैसी पहलें ही लोगों को पर्यावरण संरक्षण संबंधी विभिन्न निर्णय लेने और सार्थक कार्रवाई करने के लिए सशक्त बनाती हैं। अंत में यही कहूँगा कि 'विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस' हम सभी को इसमें शामिल होने और सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमें यह चाहिए कि हम स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र, जैव-विविधता और पर्यावरणीय मुद्दों जैसे विषयों के बारे में अधिक से अधिक जानें और इस क्रम में जागरूकता बढ़ाने के लिए हम अपने ज्ञान को अपने सभी मित्रों, परिवारजनों और सहकर्मियों के साथ ज्यादा से ज्यादा साझा करें। हमें जल, ऊर्जा और प्रकृति के

विभिन्न संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। कहना गलत नहीं होगा कि हमें सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने वाली नीतियों के लिए काम करना चाहिए। हमें वन्यजीव निगरानी कार्यक्रमों और अपने समुदाय में अन्य पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक आम आदमी द्वारा की गई छोटी-छोटी पहलें हमारे पर्यावरण और प्रकृति के लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं। इसमें क्रमशः प्लास्टिक बैग के उपयोग से बचना, पानी और बिजली का सावधानीपूर्वक और विवेकपूर्ण उपयोग करना, साइकिल चलाना पैदल चलना या सार्वजनिक परिवहन जैसे पर्यावरण अनुकूल परिवहन साधनों को अपनाना तथा जहाँ भी संभव हो अपशिष्ट उत्पादों का पुनर्चक्रण और पृथक्करण आदि को शामिल किया जा सकता है। तो आइए! इस विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस को हम एक उत्प्रेरक बनाएँ। वास्तव में यह दिवस केवल प्रतीकात्मक उत्सव तक ही सीमित नहीं रहे,

बल्कि अगली पीढ़ियों के लिए एक हरित, अधिक सुंदर, स्वच्छ और साफ और अधिक टिकाऊ नीले ग्रह (पृथ्वी) की दिशा में वास्तविक, और मात्रात्मक प्रगति के लिए मनाया जाना चाहिए। तभी वास्तव में हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ पर्यावरण की सौगात दे पायेंगे।

सुनील कुमार महला, प्रीलांस साइटर,

पसमांदा विकास फाउंडेशन द्वारा मदरसों के छात्रों के लिए सम्मान समारोह का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: पसमांदा विकास फाउंडेशन और टीवी तालीमी बोर्ड, जमीयत उलेमा युवा दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली में एक रूखनी और पाक मालेत में एक यादगार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में उन छात्रों और छात्राओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया, जिन्होंने नज़रा-ए-कुरआन गज़ेटेड मुकम्मल किया और पाठ्यक्रम प्रारंभिक टीवी पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। इस कार्यक्रम में कई सम्मानित हस्तियों ने शिरकत की, जिनमें जनाब मोहम्मद मेराज रईन (अध्यक्ष, पसमांदा विकास फाउंडेशन), मौलाना जाह्द आलम गज़ाली (अध्यक्ष, उलेमा टीएम), मौलाना अरशद अदालत नदवी (सहायक, उलेमा टीएम), जनाब सैयद फरूख़ रेस, सदस्य, गार्डेंस बोर्ड), जनाब शराफ़ साहब (सदस्य, फाउंडेशन), मोहम्मद निरवत प्रदीप (अध्यक्ष, फाउंडेशन) और मोहम्मद लुसैन फातिमा (सदस्य, फाउंडेशन) शामिल थे। इन सभी मेहमानों ने छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों पर उम्मीदें जताईं।



और उनके उज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर अनेक संबोधन में जनाब मोहम्मद मेराज रईन ने कहा कि शिक्षा ही कौनों की तरकवी की सीढ़ी है। हम टीवी और आधुनिक शिक्षा को आम करना अपनी पलती प्राथमिकता मानते हैं, क्योंकि पिछड़े तबकों को राहटीय मुद्दय्याओं में

ताने का सबसे प्रभावशाली माध्यम शिक्षा ही है। उम्मीदें जताते हैं कि शिक्षा ही कौनों की तरकवी की सीढ़ी है। हम टीवी और आधुनिक शिक्षा को आम करना अपनी पलती प्राथमिकता मानते हैं, क्योंकि पिछड़े तबकों को राहटीय मुद्दय्याओं में

रचनात्मक संदेश प्राप्त होता है। कार्यक्रम का उद्देश्य केवल छात्रों को उनकी शैक्षणिक सफलता के लिए सराहना देना नहीं था, बल्कि भिल्लत के इन बने बने छात्रों को शैक्षणिक और नैतिक मानदंडों का प्रमाण देना था, ताकि वे भविष्य में एक सफल, शिक्षित और वरिष्ठ समाज का निर्माण कर सकें। इस समारोह में विभिन्न मदरसों और मदरसों के शिक्षकों, अभिभावकों और अन्य सम्माननीय मेहमानों ने भी भाग लिया। सभी प्रतिभागियों ने इस प्रयास की सराहना करते हुए उम्मीद जताई कि पसमांदा विकास फाउंडेशन भविष्य में भी इसी प्रकार के लाभकारी और प्रभावी शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा, ताकि पिछड़े तबकों के बच्चे भी ज्ञान की राह में सफल हो सकें और उच्च शिक्षा तक पहुँच सकें। पसमांदा विकास फाउंडेशन ने टीवी तालीमी बोर्ड और जमीयत उलेमा-ए-हिंद का दिल से शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमें अपने विद्यार्थी उच्चताओं को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

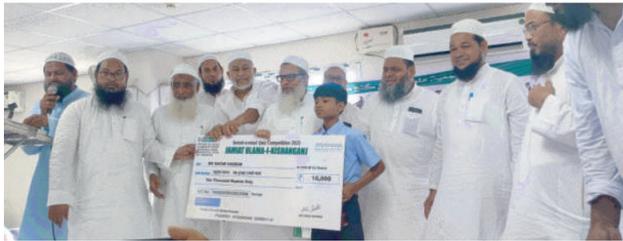
सिरत-ए-नबवी में मानव संकटों का वास्तविक समाधान मौजूद है: मौलाना महमूद असद मदनी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली / किशनगंज: जमीयत उलेमा-ए-हिन्द के अध्यक्ष मौलाना महमूद असद मदनी ने कहा कि आज दुनिया जिस विनाश के मोड़ पर खड़ी है, वहाँ से वापसी केवल और केवल ईसाियत के रहनुमा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा की सिरत-ए-तैयबा की पैरवी के जरिए ही मुमकिन है। सिरत का संदेश सिर्फ़ मुसलमानों तक नहीं बल्कि समस्त ईसाियत तक पहुँचाना समय की सबसे अहम जरूरत है।

मौलाना मदनी आज बिहार के जिला किशनगंज के कुतुबगंज में जमीयत उलेमा किशनगंज के तत्वावधान में आयोजित सिरत-ए-रसूल विज्ञान प्रतियोगिता के शानदार इनामी कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मौलाना मदनी ने जोर देकर कहा कि हमारे बच्चों को यह जानना जरूरी है कि उनकी जिंदगी केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि कौमी और सामाजिक है। जो लोग सिर्फ़ अपने लिए जीते हैं वे वास्तव में कौम पर बोझ होते हैं, और जिंदा वही है जो दूसरों के लिए जीता है। यह एहसास सिरत-ए-तैयबा के अध्ययन से ही उत्पन्न हो सकता है।



उन्होंने आगे कहा कि नबी करीम से मोहब्बत ईमान का हिस्सा है और यही जिंदगी का सबसे बड़ा सरमाया (पूंजी) है। आज की युवा पीढ़ी को सिरत-ए-नबवी से जोड़ना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। परवरदिगार-ए-आलम ने हमें यह अजीम (महान) शर्क अता फरमाया कि हमें अपने महबूब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा का उम्मत बनाया।

जमीयत उलेमा-ए-हिन्द की शाखा किशनगंज ने सिरत-ए-तैयबा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए एक मुबारक कदम उठाया है। बच्चों के दिलों में सिरत-ए-रसूल की रौशनी बिठाने और उनकी

शिक्षा-प्रशिक्षण को नबवी सौंचे में ढालने के लिए एक श्रंखलाबद्ध प्रतियोगिता कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। यह केवल एक प्रतियोगिता नहीं बल्कि एक शैक्षणिक और तालीमी तहरीक (आंदोलन) है — जिसका उद्देश्य है कि हर बच्चा सिरत-ए-पाक से वाकिफ़ हो और उसी को अपना आदर्श बनाए। कार्यक्रम की अध्यक्षता जमीयत उलेमा किशनगंज के नायब सदर हज़रत मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद ईसा जामी कासमी ने की, जबकि सरपरस्ती बिहार जमीयत उलेमा के सदर मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद जावेद इक़बाल कासमी ने की। अधिवेशन का संचालन जमीयत उलेमा

किशनगंज के प्रवक्ता व सचिव मुफ़्ती मोहम्मद मनाज़िर नोमानी कासमी ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में कहा: हमारे बच्चों की एक बड़ी संख्या ईसाियत के रहनुमा की हयात-ए-तैयबा से अनजान है। यही खाई खत्म करने के लिए जमीयत किशनगंज लगातार सिरत पर आधारित कार्यक्रम आयोजित कर रही है।

जमीयत उलेमा किशनगंज के महासचिव हज़रत मौलाना मोहम्मद ख़ालिद अनवर कासमी और विज्ञान प्रतियोगिता के संयोजक जनाब मौलाना अबू सालेक शहीद नदवी, महासचिव जमीयत उलेमा शहर किशनगंज की मेह नर से यह कार्यक्रम पिछले कई वर्षों से शानदार ढंग से आयोजित होता आ रहा है। अब तक अल्लहुलिल्लाह इस कार्यक्रम से 10 हजार से अधिक बच्चे लाभान्वित हो चुके हैं। इस सिरत विज्ञान प्रतियोगिता में 100 से अधिक स्कूलों के लगभग 3000 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, जिन्हें उनकी उम्र के अनुसार दो ग्रुप में बांटा गया: ग्रुप A और ग्रुप B। दोनों ग्रुपों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क्रमशः 10 हजार, 5 हजार और 3 हजार रुपये के नगद इनाम मुख्य अतिथि के हाथों से प्रदान किए गए।

साधारण परिवार से ताल्लुक रखने वाले डॉ० कलाम ने विश्वस्तरीय कीर्तिमान स्थापित किए: गुरचरन सिंह राजू



मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। पूर्व राष्ट्रपति और भारत के 'मिसाइल मैन' डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि के अवसर पर फेस इस्लामिक कल्चरल कम्युनिटी इंडीग्रेशन (फिकबि) द्वारा 'कलाम तुझे सलाम' शीर्षक के तहत एक प्रेरणादायक स्पीच प्रोग्राम तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन पूर्वी दिल्ली के न्यू गोविंदपुरा स्थित संजय पार्क में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता फिकबि के फाउंडर चेयरमैन डॉ. मुस्ताक अंसारी ने की।

इस आयोजन में सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र की कई जानी-मानी हस्तियों ने भाग लिया। दिल्ली नगर निगम शाहदरा साउथ जोन के डिट्टी चेयरमैन राजू सचदेवा, कृष्णा नगर जिला कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष गुरचरन सिंह राजू तथा जगतपुरी ब्लॉक कांग्रेस कमिटी के कार्यकारी अध्यक्ष नीतू बालाजी व समाज सेवी सोनू बालाजी मुख्य रूप में उपस्थित रहे।

गुरचरन सिंह राजू ने अपने संबोधन में डॉ. कलाम की सादगी, कारबलियत और देशभक्ति की सरहना करते हुए कहा कि एक बेहद साधारण पृष्ठभूमि से निकलकर उन्होंने विज्ञान, शिक्षा और

नेतृत्व के क्षेत्र में विश्वस्तरीय कीर्तिमान स्थापित किए। श्री राजू ने दिल्ली में वायु प्रदूषण की गंभीरता को लेकर चिंता जताई और कहा कि शहर को स्वच्छ ऑक्सीजन के लिए कम से कम 20 करोड़ पौधों की आवश्यकता है।

राजू सचदेवा ने डॉ. कलाम की जीवशैली से प्रेरणा लेने की बात करते हुए कहा कि केवल पौधे लगाने से नहीं, बल्कि उनकी देखभाल को जिम्मेदारी भी हम सबकी है। उन्होंने युवाओं को पर्यावरण के प्रति जागरूक होने का आह्वान किया।

डॉ. मुस्ताक अंसारी ने अपने संबोधन में डॉ. कलाम के विचारों को आत्मसात करने की बात कही। उन्होंने कहा, रअगर ईसान के भीतर सच्ची इच्छा शक्ति हो, तो कोई भी मंजिल दूर नहीं। हमें डॉ. कलाम की तरह दिन में सपने देखने और उन्हें साकार करने का जज्बा अपनाना चाहिए।

इस अवसर पर डॉ. मोहम्मद इल्यास सैफ़ी ने भी विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. कलाम जैसी विभूतियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि देशहित में कार्य करना किसी धर्म या जाति से परे होता है। हमें उनकी तरह निस्वार्थ भाव से समाज के लिए कार्य करना चाहिए। वृक्षारोपण कर पर्यावरण सुरक्षा की दिशा में योगदान दिया।

नेताजी, इस खतरनाक अज़गर सांप से साबधान और सतर्क रहिएगा नहीं तो एक दिन ये आप को ही पूरा निगल जाएगा आखिर सांप तो सांप ही होता है

ये एक दिन भी नहीं निभा सकेंगे देश की सरहद पर सैनिक का किरदार....., वो नेता और पार्टियाँ जो भारतीय सैना को बार बार मशवरे हजार देते हैं...!

नई दिल्ली, संजय सागर सिंह। आजकल कि राजनीति को रेखांकित करते हुए लोगों ने बताया कि एक बार एक नेताजी ने एक अज्ञात सांप पाला, वो सांप से बहुत प्यार करते, उसे वो रोज अच्छा अच्छा भोजन खिलाते और सभी सुख सुविधाओं के साथ उस सांप को अपने घर-परिवार और अपनी पार्टी कार्यालय में रखते और अज्ञात सांप बड़े आराम से अपना आकार बढ़ा रहा था।

लेकिन फ़िर एसआईआर होता देख वो अज्ञात सांप बीमार जैसा हो गया, उसने खाना भी छोड़ दिया। यहाँ तक कई दिनों तक उसने कुछ नहीं खाया - तो वो नेताजी यह देख बहुत परेशान हो गए और उसे वेटेरिनरी डॉक्टर के यहाँ लेके गए। जहाँ डॉक्टर ने सांप का चैकअप किया और उस नेताजी से पूछा "क्या ये सांप आपके साथ ही सोता है नेताजी?" तो नेताजी ने चौंके हुए बोला हाँ। फ़िर डॉक्टर ने पूछा - क्या ये आपसे बहुत सट के सोता है। नेताजी ने फ़िर से बोला हाँ। फ़िर डॉक्टर ने पूछा क्या रात को ये सांप अपनी पूरी बाँडी को स्ट्रेच करता है?

ये सुनकर नेताजी फ़िर से चौंके गए उन्होंने कहा - हाँ डॉक्टर साहब ये रात को अपनी पूरी बाँडी को बहुत बुरी तरह से स्ट्रेच करता है, और मुझसे इसकी इतनी बुरी हालत देखी नहीं जाती। मैं किसी भी तरह से इसका दुःख दूर नहीं कर पाता

डॉक्टर साहब। यह सुन डॉक्टर ने नेताजी की मूर्खता पर हसते हुए कहा कि आपके प्यारे अज्ञात सांप को कोई बीमारी नहीं है, नेताजी और ये जो रात को तुम्हारे बिल्कुल बगल में लेटकर अपनी बाँडी को स्ट्रेच करता है, वो दरअसल तुम्हें पूरा निगलने के लिए अपने शरीर को तुम्हारे बराबर लम्बा करने की कोशिश करता है। वो आप के साथ रहकर लगातार ये परख रहा है कि तुम्हारे पूरे शरीर को वो ठीक से निगल पायेगा या नहीं और निगल लिया तो क्या पचा पायेगा या नहीं?

नेताजी, सोते समय इस खतरनाक सांप से साबधान और सतर्क रहिएगा नहीं तो एक दिन मौका देख ये आप को ही पूरा निगल जाएगा। आख़िर सांप तो सांप ही होता है। इतना सुनते ही नेताजी के पैरों तले जमीन खिसक गयी और नेताजी अपना सर पकड़के कुर्सी पर बैठ गए।

अतः साँपों के डॉक्टर कि बातों से ये शिक्षा मिलती है, कि जो आपके साथ रह वक्त रहते हैं, जिनके साथ आप खाते पीते उठते बैठते भरोसा करते हैं। जरूरी नहीं कि वो भी आपके उतना ही प्यार करते हो जितना आप उन्हें प्यार करते हैं। हो सकता है वो आपको धोखे से अज्ञात सांप को तरह निगलने के लिए अपना आकार धीरे-धीरे बढ़ा रहा हो और आप निरे भावुक होकर उसकी दीनहीन दिशा को देखकर द्रवित हो रहे हों, लेकिन वो मौका मिलते ही आप को ही निगलने का प्लान बना रहे हों। इसलिए समय रहते ऐसे अज्ञात साँपों से सावधान और सतर्क हो जाइए।

हरियाली तीज हिंदुओं के सबसे प्रमुख त्योहारों में से एक है, जिसे हिंदू महिलाएं बड़े उत्साह और खुशी के साथ मनाती हैं



परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हरियाली तीज का हिंदू धर्म में विशेष धार्मिक महत्व है और यह मुख्य रूप से उत्तर भारत में मनाई जाती है। हरियाली तीज का सबसे महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार सावन माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार 27

जुलाई 2025 को मनाया जाएगा। समन्वय एकता मंच, दिल्ली द्वारा उत्तर भारत की सांस्कृतिक गतिविधि के रूप में हरियाली तीज की पूरू संस्था पर श्री विष्णु मंदिर (रैगर समाज) मादीपुर में समन्वयक एवं अध्यक्ष श्रीमती जय श्री जलुथरिया एवं उनकी टीम द्वारा आयोजित



कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व सांसद श्री रमेश कुमार दक्षिण दिल्ली, वरिष्ठ अतिथि अध्यक्ष एवं पाषंड श्रीमती सायिका चौधरी, वरिष्ठ अतिथि उप-अध्यक्ष एवं पाषंड श्री साहिल गंगवाल, श्री जेपी पंवार, श्री भास्कर शास्त्री, श्रीमती शकुंतला खोलिया,

श्रीमती तनुजा भुरंडा, श्रीमती सीमा सोनकर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम और गणगौर पूजा में हजारों महिलाओं ने भाग लिया। समन्वय एकता मंच द्वारा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नृत्य प्रतियोगिता और स्वादिष्ट भोजन का भी आयोजन किया गया।



विजय गर्ग

देशों में स्वास्थ्य कार्यबल की मांग और आपूर्ति एक कठिन समस्या है, अधिकांश देशों में पर्याप्त संख्या में डॉक्टरों और नर्सों की कमी है और 2030 तक 18 मिलियन स्वास्थ्य श्रमिकों की अनुमानित वैश्विक कमी है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता देशों में प्रवास करते हैं, प्रवाह आमतौर पर ग्लोबल साउथ के देशों से उत्तर में रहने वालों के लिए होता है। जिन देशों से स्वास्थ्य पेशेवर पलायन करते हैं, वे भी आंतरिक आपूर्ति की कमी का सामना करते हैं। उदाहरण के लिए, श्रीलंका व्यापक परित्याग का गवाह है, जिसे अन्य देशों के पेशेवरों को प्राप्त करके (आंशिक रूप से) संबोधित किया जाता है। अनुमानित 10-12 प्रतिशत विदेशी प्रशिक्षित डॉक्टर और नर्स उन देशों से आते हैं, जिन्हें स्थानीय स्वास्थ्य कर्मियों की कमी के लिए जाना जाता है। ओईसीडी डेटा अनुमान बताते हैं कि 2009 से 2019 के बीच, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, ब्रिटेन में 25 प्रतिशत से 32 प्रतिशत डॉक्टर और अमेरिका दक्षिण एशिया और अफ्रीका के मेडिकल ग्रेजुएट थे। भारतीय डॉक्टर, नर्स और अन्य स्वास्थ्य पेशेवर दुनिया भर के देशों में प्रवास करते हैं—लगभग 75,000 भारतीय प्रशिक्षित डॉक्टर ओईसीडी देशों में काम करते हैं, और अनुमानित 640,000 भारतीय नर्स विदेश में काम करती हैं। फिलीपींस एक और उदाहरण है—देश नर्सों और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। 1993, 2000 से अधिक फिलीपींस-प्रशिक्षित नर्स विदेश में काम करती हैं, जो दुनिया भर में सभी फिलीपींसो नर्सों का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा है। अर्थशास्त्र और भूराजनीति पुरा और पुल कारकों के संयोजन के माध्यम से इतर तरह के प्रवास की सीमा और प्रकृति को प्रभावित करते

भारत डॉक्टरों और नर्सों का निर्यात कर रहा है। देश को उनकी भी जरूरत है



हैं। सीमित कैरियर विकास और कम मजदूरी प्रमुख आर्थिक धक्का कारक हैं। स्रोत देश में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष अक्सर राजनीतिक धक्का कारक होते हैं। व्यापार समझौते जो प्रवास को प्रोत्साहित करते हैं, स्वास्थ्य संकट जो स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को कुछ क्षेत्रों में खींचते हैं और अंतरराष्ट्रीय भर्ती नीतियां सभी पुल कारक हैं, जो बदले में, स्रोत देशों में कमी में योगदान करते हैं। फिलीपींस और भारत जैसे देशों ने स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के निर्यात को प्रोत्साहित करने, उन्हें प्रेषण और आर्थिक लाभ के स्रोतों के रूप में देखने के लिए नीतियों को औपचारिक रूप दिया है। फिर भी, दोनों देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की भारी कमी है। प्रेषण और कौशल विकास के रूप में संभावित लाभ के बावजूद, पहले से ही कमी का सामना कर रहे देशों में कार्यबल क्षमता की हानि लाभ को बढ़ाती है। इसलिए, एक संतुलित परेल्ड और अंतरराष्ट्रीय नीति प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली और वैश्विक इकित्ती की जरूरतों पर केंद्रित है।

राजनयिक लाभ के लिए क्रॉस-कंट्री माइग्रेशन का अक्सर लाभ उठाया जाता है। भारत, जिसे पहले से ही दुनिया की फार्मसो के रूप में जाना जाता है, अंतरराष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के प्रवास का लाभ उठाता है, प्रेषण और निवेश के माध्यम से आर्थिक लाभ को बढ़ावा देता है, स्वास्थ्य क्षेत्रों में अपने वैश्विक प्रभाव को बढ़ाता है, और परिपूर प्रवास और द्विपक्षीय सहयोग को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों के माध्यम से मरिस्तक नाली की चुनौतियों का प्रबंधन करता है। इसने पड़ोसी और अफ्रीकी देशों में चिकित्सा पेशेवरों को तैनात करके कोविड महामारी के दौरान चिकित्सा कूटनीति को बढ़ाया। अब जरूरत है कि अधिक व्यापक बातचीत करने पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाए—और लागू करने योग्य—स्रोत और गंतव्य देशों के बीच द्विपक्षीय समझौते, जिसमें संभावित रूप से मुआवजा तंत्र, चिकित्सा शिक्षा में लक्षित निवेश, स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे, या प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल हो सकते हैं,

कुशल श्रमिकों के नुकसान की भरपाई करने के लिए। डब्ल्यूएचओ कोड इस तरह के समझौते के पुनर्निर्माण में एक प्रारंभिक बिंदु है। जन्म दर में गिरावट के साथ बढ़ती आबादी बढ़ती मांगों और विकसित देशों में स्वास्थ्य पेशेवरों की तीव्र कमी का कारण बन रही है। भारत और अन्य देश स्वास्थ्य पेशेवरों की आपूर्ति करने की क्षमता रखते हैं। भारत बेहतर संस्थागत तंत्रों के माध्यम से लाभ को अधिकतम कर सकता है, जैसे कि कार्यबल मरिस्तक नाली का प्रबंधन करने के लिए एक केंद्रीकृत एजेंसी की स्थापना। विदेशी रोजगार के समन्वय के लिए एजेंसियों की स्थापना के साथ केरल का अनुभव, शिकायतों का समाधान, और वापसी करने वालों का समर्थन राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सूचित कर सकता है। तो क्या फिलीपींस के प्रवासी श्रमिकों के विभाग के अनुभव हो सकते हैं?

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, ग्लोबल चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सावन के महीने में शिव मंदिरों पर दो बौद्ध देशों के बीच तांडव

- हरीश शिवनानी

सावन का महीना भारत में सनातनी संस्कृति-धर्मावर्तारियों के लिए पावन और महत्वपूर्ण माना जाता है। पूरे देश में शिव मंदिरों में महीने भर पूजा-अर्चना के कार्यक्रम चलते रहते हैं। इस बार सावन का महीना अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट कारण से घर्वा में आ गया है। इस सावन माह में दो बौद्ध देशों के बीच साक्षात् तांडव छिड़ गया है। इसका कारण है दो शिव मंदिर। थाईलैंड और कंबोडिया की सीमा पर स्थित प्रासात प्रेर विरियार और प्रासात ता मुएन थोम नामक ये शिव मंदिर करीब एक हजार वर्ष प्राचीन हैं। दोनों देश बौद्ध बलुते हैं, लेकिन मंदिर की हिंदू विरासत दोनों के लिए सांस्कृतिक महत्व रखती है। थाईलैंड में हिंदू परंपरा और बौद्ध धर्म का मिश्रण देखा जाता है, जबकि कंबोडिया इसे अपनी खूबे पहायन से जोड़ता है। भारत की तरह वहाँ भी सावन मास में इनका महत्व बढ़ जाता है। दो बौद्ध देशों के बीच शिव मंदिरों को लेकर संघर्ष यह पुरु करता है कि आज भी यहाँ के निवासियों के मन-मरिस्तक में अपनी मूल, प्राचीन सनातन संस्कृति की जड़ों के प्रति कितना सम्मान, कितनी लुभा है। थाईलैंड और कंबोडिया इन शिव मंदिरों पर अपना स्वाभिगत जताने के लिए सो साल से ज्यादा संघर्षरत हैं। दोनों खूबे कालीन हिंदू मंदिर हैं, जो लगभग 153 किमी की दूरी पर स्थित हैं और लंबे समय से दोनों देशों के बीच तनाव का केंद्र रहे हैं। प्रासात प्रेर विरियार शिव मंदिर और इसके आसपास के क्षेत्र का विवाद थाईलैंड और कंबोडिया के बीच एक जटिल मुद्दा है। यह मंदिर थाईलैंड और कंबोडिया की सीमा पर डोंगरेक पर्वत श्रृंखला में स्थित है। प्रासात प्रेर विरियार मंदिर का निर्माण 9 वीं से 11 वीं शताब्दी के बीच खूबे साम्राज्य (9 वीं से 15 वीं शताब्दी) के दौरान हुआ। मंदिर को 'शिवरेश्वर' नाम से भी जाना जाता है। मंदिर में शिवलिंग और नंदी की प्रतिमा स्थापित है, जो हिंदू धर्म की समृद्ध परंपरा को दर्शाती है। मंदिर को अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान मानते हैं। वहीं, थाईलैंड में इसे हिंदू और बौद्ध विरासत के हिस्से के रूप में देखा जाता है, क्योंकि यह वल्ले स्याम (थाईलैंड का पुराना नाम) के प्रभाव में था। 1863 से 1953 तक कंबोडिया फ्रांसीसी उपनिवेश के अधीन था। 1907 में फ्रांस और स्याम (थाईलैंड) के बीच एक समझौता हुआ, जिसमें डोंगरेक पर्वत क्षेत्र और प्रासात प्रेर विरियार मंदिर को कंबोडिया के हिस्से के रूप में धिस्तित किया गया। जिसे

थाईलैंड ने स्वीकार नहीं किया। इस सीमा निर्धारण ने विवाद की नींव रखी, क्योंकि थाईलैंड का दावा था कि मंदिर और इसके आसपास का क्षेत्र उनके सूरिन और सिसाकेट प्रांतों का हिस्सा है। वर्ष 1959 में कंबोडिया विवाद को अंतरराष्ट्रीय व्यापारता ले गया। 1962 में व्यापारता ने मंदिर कंबोडिया के क्षेत्र में माना। थाईलैंड ने फैसले को स्वीकार नहीं किया। जुलाई 2008 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर का दर्जा दिया, जिसका भी थाईलैंड ने विरोध किया। इसके बाद सीमा पर संघर्ष तनाव बढ़ गया और 2008 से 2011 तक दोनों देशों के सैनिकों के बीच कई झड़पें हुईं। 2011 में यह संघर्ष वरम पर पहुंच गया। अरु, प्रासात प्रेर विरियार मंदिर की तरह ही प्रासात ता मुएन थोम प्राचीन मंदिर भी विवाद का बिंदु है। प्रासात ता मुएन थोम की खास बात यह है कि इसका शिवलिंग प्राकृतिक चूयन से बना है और 'स्वयंभू शिवलिंग' की तरह पूजा जाता है। थाईलैंड के सूरिन प्रांत और कंबोडिया के त्रोरार नौवेई प्रांत की सीमा पर प्राचीन खूबे राजगर्ग पर स्थित यह मंदिर 12 वीं शताब्दी में खूबे सम्राट उदयदियवर्धन द्वितीय के शासनकाल में बना। प्रासात ता मुएन थोम मंदिर को लेकर तनाव 13 फरवरी 2025 से शुरू हुआ। जब कंबोडियाई सैनिकों ने मंदिर में जाकर अपना राष्ट्रगान गाया, जिसे थाई सैनिकों ने सीमा उल्लंघन माना और विवाद शुरू हो गया। इसके बाद 28 मई 25 में एमराल्ड ट्रांगल क्षेत्र में एक कंबोडियाई सैनिक की मौत के बाद दोनों देशों के बीच फिर तनाव बढ़ गया। इस घटना के बाद एक रोकथाम वाक्या हुआ। 28 मई को हुए टकराव के बाद तनाव कम करने के उद्देश्य से थाईलैंड की प्रधानमंत्री पेटोंगटार्न शिनावावा ने कंबोडिया के पूर्व नेता हुन सेन के साथ फोन पर बातचीत की। जिसमें पेटोंगटार्न ने थाईलैंड-कंबोडिया सीमा विवाद पर चर्चा हुई। इस बातचीत में उन्होंने काठित तौर पर थाई सेना के कमांडर की आलोचना की और हुन सेन को 'अंकल' कहकर संबोधित किया। इस बात को थाईलैंड में अप्रामाजिक और 'राष्ट्र के सम्मान' के विरुद्ध मानते हुए इसे प्रधानमंत्री पद की नैतिकता का उल्लंघन माना गया और 1 जुलाई को थाईलैंड की संवैधानिक अदालत ने प्रधानमंत्री शिनावावा को निलंबित कर दिया। इसके बाद 23 जुलाई को एक थाई सैनिक लैसाइन की घपट में आ गया और विवाद अब सीधे संघर्ष में बदल गया और 24 जुलाई से थाईलैंड और कंबोडिया टैकों, तोपों, राकेटों और फौजों को साथ लेकर युद्ध मैदान में आ गए हैं। राकेट वार शुरू हो गई है। एक दूसरे पर बम बरसाए जा रहे हैं, सेनाएं आगने सामने गोर्वा संभाले खड़ी हैं। अब तक 40 लोगों की मौत हो चुकी है और करीब 500 लाख लोग विस्थापित हो चुके हैं। सावन मास में फरिलाल यह तांडव जारी है।

“100 किलोमीटर दूर की परीक्षा: क्या अभ्यर्थी की जिंदगी इतनी सस्ती है?”

— “चुनाव में स्टाफ जाता है, परीक्षा में छात्र क्यों? रोजगार की दौड़ में रास्ते ही कठिन क्यों?” — सड़क हद्दसों में गई युवाओं की जान, कौन लेगा जिम्मेदारी? — नौकरी की तलाश में जिंदगी हार रहे बेरोजगार। — परीक्षार्थियों का विस्थापन: CET के नाम पर हरियाणा में प्रशासनिक असंवेदनशीलता और मौते हरियाणा में आयोजित CET परीक्षा ने 15 लाख अभ्यर्थियों को 100-150 किलोमीटर दूर केंद्रों पर भेजा, जिससे भारी मानसिक, शारीरिक और आर्थिक दबाव बना। कई छात्रों की सड़क दुर्घटनाओं और थकावट से मौत हो गई। सवाल उठता है—क्या परीक्षा की पारदर्शिता अभ्यर्थियों की जान की कीमत पर होनी चाहिए? क्या प्रशासनिक योजना का अभाव युवाओं के जीवन से बड़ा है? यह लेख इसी असंवेदनशील व्यवस्था पर कठोर सवाल उठाता है, और भविष्य के लिए एक जिम्मेदार व मानवीय परीक्षा प्रणाली की मांग करता है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

परीक्षा देना किसी भी युवा के जीवन का सबसे संवेदनशील और निर्णायक समय होता है। यह वह क्षण होता है जब वर्षों की मेहनत और सपनों को हकीकत में बदलने का रास्ता खुलता है। लेकिन अगर परीक्षा केंद्र तक पहुंचने की राह ही संघर्षपूर्ण हो जाए, तो उस परीक्षा की निष्पत्ता और प्रशासनिक तैयारी पर सवाल उठाना लाजमी है। हरियाणा में आयोजित की गई CET (कॉमन एलिजबिलिटी टेस्ट) परीक्षा में यही हुआ — जब राज्य भर के

15 लाख से अधिक अभ्यर्थियों को अपने घरों से 100 से 150 किलोमीटर दूर तक परीक्षा देने भेजा गया। और वह भी तब जब वे अपने ही जिले या शहर में परीक्षा देने की सुविधा की आशा रखते थे।

हरियाणा सरकार और HSSC (हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग) ने यह परीक्षा 'सुचारु और पारदर्शी' तरीके से आयोजित करने का दावा किया। लेकिन उस पारदर्शिता की कीमत किसने चुकाई? छात्र। जो हरियाणा के कोने-कोने से, कभी रोडवेज बसों में खचाखच भरे माहौल में, तो कभी निजी वाहनों में अपनी जेब खाली करते हुए परीक्षा केंद्रों तक पहुंचे। अनेक लड़कियों ने रात भर सफर करके सुबह 10 बजे की परीक्षा दी, कई ग्रामीण युवाओं ने अपने जीवन में पहली बार शहरों की तरफ अकेले कूच किया, और कुछ लोग परीक्षा केंद्र पर पहुंच ही नहीं सके। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या प्रशासन को यह एहसास नहीं कि परीक्षा केवल एक पेपर नहीं होती, वह अभ्यर्थी के पूरे जीवन की उम्मीद होती है?

हरियाणा में हर पांच साल में चुनाव होते हैं। उसमें भी बूथ ड्यूटी, पोलिंग स्टेशन की निगरानी, EVM की सुरक्षा—ये सब होता है। क्या उसमें कर्मचारियों को एक जिले से दूसरे जिले तक नहीं भेजा जाता? क्या कभी किसी मतदाता को 100 किलोमीटर दूर वोट डालने भेजा गया है? नहीं। तो फिर परीक्षा में यह असंवेदनशीलता क्यों? क्या युवा वर्ग प्रशासन की प्राथमिकता में नहीं आता? क्या सरकार मानती है कि एक बेरोजगार युवक की यात्रा, उसका समय, उसकी जेब का खर्च, उसकी परीक्षा की तैयारी—इन सबका कोई मूल्य नहीं है? जिन युवाओं के पास किरीआ देना के पैसे नहीं थे, उन्हें परीजनों से उधार लेना पड़ा। किसी ने खेत गिरवी रखे, उन्हें किसी ने अपनी मां की जमा पूंजी निकाली। लड़कियों और

विकलांग उम्मीदवारों को न सिर्फ यात्रा की परेशानी हुई बल्कि उनके लिए रुकने, भोजन और सुरक्षा की चिंताएं और भी ज्यादा थीं। लंबी यात्रा के बाद कोई भी मानसिक रूप से शांत नहीं रह सकता। परीक्षा में प्रदर्शन सीधे रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि छात्र मानसिक रूप से कैसा महसूस कर रहा है। जिन छात्रों का केंद्र 150 किमी दूर था, उन्हें परीक्षा से एक दिन पहले ही निकलना पड़ा। इसका सीधा असर नौद, भोजन और पढ़ाई की निरंतरता पर पड़ा।

जब छात्र एडमिट कार्ड डाउनलोड करते हैं, तब उनसे परीक्षा केंद्र का प्राथमिक शहर चुनने का विकल्प दिया जा सकता था, जैसा कई राष्ट्रीय परीक्षाओं में होता है। हर जिले में कम से कम 5-10 सरकारी या निजी संस्थान तो हैं ही, जहां परीक्षा आयोजित हो सकती थी। जैसे चुनाव में कर्मचारी अन्य जिलों में ड्यूटी करते हैं, वैसे ही शिक्षक, पर्यवेक्षक और अन्य स्टाफ को दूर भेजा जा सकता था। छात्र अपने ही जिले में परीक्षा देते। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या यह एक सोची-समझी योजना था व्यवस्थागत असफलता? क्या प्रशासन को छात्रों के संघर्ष की कोई चिंता नहीं? क्या यह बेरोजगार युवाओं की परीक्षा लेने के नाम पर उनका मनोबल तोड़ने की प्रक्रिया नहीं है? क्या HSSC खुद को जवाबदेह मानती है या सिर्फ नोटिस निकाल देना पर्याप्त है?

हरियाणा के नेताओं ने इस विषय पर कोई विशेष संवेदनशीलता नहीं दिखाई। जबकि यही छात्र आने वाले समय में वोट भी हैं और परिवर्तन के वाहक भी। राजनीतिक दलों को चाहिए था कि इस मुद्दे पर खुलकर सरकार से सवाल पूछते। लेकिन अफसोस, बेरोजगारी का मुद्दा अब शोर में दबा दिया गया है, और रोजगार की परीक्षा अब छात्रों के सहनशीलता की परीक्षा बन गई है।

हरियाणा CET परीक्षा के दौरान ऐसी कई घटनाएं सामने आईं जो न सिर्फ दुःखद थीं, बल्कि प्रशासनिक लापरवाही की पोल भी खोल गईं। जाँद में एक छात्र का सड़क दुर्घटना में निधन हो गया, जब वह मोटरसाइकिल से परीक्षा केंद्र जा रहा था। भिवांनी में एक महिला अभ्यर्थी की तबीयत बिगड़ने पर अस्पताल में मौत हो गई, वजह—थकावट, गर्मी और तनाव। रोहतक में बस में सफर के दौरान एक छात्र को हार्ट अटैक आया और उसकी मृत्यु हो गई। परिवार का कहना था कि वह पिछली रात से बिना सोए निकला था और खाना भी नहीं खाया था। कैथल-करनाल हाईवे पर ट्रक से टकराई बाइक पर सवार दो अभ्यर्थियों की मौके पर मौत हो गई। सिरसा में दो सगे भाई परीक्षा देने जाते हुए दुर्घटना का शिकार हुए और जान चली गई। रेवाड़ी में परीक्षार्थियों से भरी एक कार पलटी, जिसमें कई छात्र घायल हो गए। इन खबरों ने साबित कर दिया कि परीक्षा केंद्रों की गलत प्लानिंग सिर्फ असुविधा नहीं, जीवन की कीमत पर खड़ी की गई प्रशासनिक गलती थी।

100-150 किमी की लंबी यात्रा, वो भी सुबह 10 बजे की परीक्षा के लिए, छात्रों को रात में ही निकलना पड़ता है। थकावट और तनाव, जो सीधे हार्ट अटैक या दुर्घटनाओं का कारण बन सकता है। रहने-खाने की कोई व्यवस्था नहीं, कोई छात्र स्टेशन पर सोया, कोई बस स्टैंड पर, और कोई खुले में इंटरच करता रहा। सड़क सुरक्षा की घोर अनदेखी—इतने बड़े परीक्षा आयोजन के दौरान कोई ट्रैफिक प्लान या मेडिकल बैकअप नहीं।

सरकार और प्रशासनिक अधिकारी अगर इन मौतों पर संवेदन व्यक्त कर भी दें, तो सवाल यह है—क्या ये मौतें रोकी नहीं जा सकती थीं? क्या एक बेहतर परीक्षा केंद्र प्रणाली, जिलावार आयोजन, और परिवहन की व्यवस्था इन जिंदगियों

को बचा नहीं सकती थी? सपनों के पीछे भागते हुए छात्र नहीं मरे, मरा है सिस्टम—जो संवेदनहीन होकर देखा रहा।

अब सवाल उठता है—क्या HSSC इन मौतों पर जवाबदेह उतराया जाएगा? क्या परीक्षा केंद्र निर्धारण के मानदंडों की समीक्षा होगी? क्या आने वाली परीक्षाओं में कोई सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे? अगर नहीं, तो ये मौतें महज आंकड़े बन जाएंगे, और हर अगली परीक्षा में फिर कोई नया अभ्यर्थी... नौकरी की उम्मीद में जान गंवाता रहेगा।

परीक्षा केंद्र निर्धारण में 'होम डिस्ट्रिक्ट प्रेफरेंस' लागू किया जाना चाहिए। परीक्षा व्यवस्था में शिक्षा विभाग के अनुभवी अधिकारियों को जोड़ा जाए। सीटिंग प्लान और स्टाफ तैनाती का मॉडल चुनाव आयोग से सीखा जाए। हर जिले में स्थायी 'एग्जाम सेंटर इन्फ्रास्ट्रक्चर' विकसित किया जाए। परीक्षार्थियों से फ्रीडंबेक और सुझाव अनिवार्य रूप से लिए जाएं। ट्रैफिक, मेडिकल और सुरक्षा योजना हर बड़े परीक्षा आयोजन से पहले बनाई जाए। यह सुखद है कि हरियाणा के कई कोनों से अभ्यर्थियों ने सोशल मीडिया, धरनों और याचिकाओं के माध्यम से इस विस्थापन मॉडल का विरोध किया है। अब यह जरूरी है कि यह विरोध संगठनात्मक रूप ले और सरकार तक आवाज पहुंचे कि—हम परीक्षा देने की तैयारी हैं, लेकिन अपने आत्मसम्मान को गिरवी नहीं रखेंगे।

सरकार को यह याद रखना होगा कि बेरोजगार युवा सिर्फ नौकरी के लिए आवेदन नहीं करते, वे देश के भविष्य की बुनियाद रख रहे होते हैं। अगर हम उन्हें जल्द ही वृद्ध-दर भत्ताकर थका देंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ किस व्यवस्था पर भरोसा करेंगी?

महाश्वेता देवी: शब्दों में जंग, जीवन में आंदोलन

[महाश्वेता देवी: आवाज उन लोगों की, जिन्हें कोई सुनता नहीं था]

जब शब्द तलवार की धार बन जाएं और कलम क्रांति का हथियार, तब रचनाएँ केवल स्याही और कागज नहीं रहतीं, बल्कि वे समय की सीमाओं को तोड़कर सदियों तक दिलों में गुंजती हैं। ऐसी ही थीं महाश्वेता देवी — एक लेखिका, एक योद्धा, जिनकी लेखनी में जंगलों की साँस थी, आदिवासियों का दर्द था, और समाज के अंधेरे को चीरती एक प्रखर रोशनी थी। उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें केवल याद करना नहीं, बल्कि उनके विचारों को जीवित रखना, उनके संघर्षों को आत्मसात करना और उनकी लड़ाई को आगे ले जाना हमारा सच्चा कर्तव्य है। 28 जुलाई 2016 को जब वे इस दुनिया से रुखसत हुईं, भारत ने न केवल एक साहित्यकार खोया, बल्कि एक ऐसी शक्तिशाली को अलविदा कहा, जिसने अपनी कलम से हाशिए के लोगों को आवाज दी और अन्याय के खिलाफ विद्रोह की मशाल जलाई। उनकी लेखनी में थी वह आग, जो हर उस जुलूम को भस्म करना चाहती थी जो इसानियत को लज्जित करता था।

14 जनवरी 1926 को ढाका (अब बांग्लादेश) में एक साहित्यिक और प्रबुद्ध परिवार में जन्मी महाश्वेता देवी की रंगों में शुरू से ही साहित्य और सामाजिक चेतना बसी थी। उनके पिता मनीष घटक कवि और समाजकार थे, तो माँ धारित्री देवी लेखिका और उपन्यासकारिका। इस माहौल ने उन्हें बचपन से ही साहित्य और सामाजिक सरोकारों से जोड़ा। कोलकाता विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर करने वाली महाश्वेता की असली शिक्षा उन जंगलों, गाँवों और आदिवासी बस्तियों में

हुई, जहाँ उन्होंने वंचितों के दर्द को करीब से देखा और जिया। उनकी रचनाएँ उस मिट्टी की गंध, उस पीड़ा और उस संघर्ष की गवाही देती हैं, जो भारत के आदिवासी और हाशिए पर जी रहे समुदायों की जिंदगी का सच है। उनकी लेखनी न केवल साहित्य थी, बल्कि एक आंदोलन थी — जो अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करती थी और समाज को बदलने का साहस देती थी।

महाश्वेता देवी का साहित्य केवल कहानियों का संग्रह नहीं, बल्कि इतिहास के उन दवे-छिपे पन्नों का जीवन्त दस्तावेज है, जिन्हें सत्ता ने मिटाने की साजिश रची। उनकी कृतियाँ—'रूदाली', 'हजार चौरासी की माँ', 'अरण्ये अधिकांश', और 'अनिगर्भ'—समाज के उस कठोर यथार्थ को उजागर करती हैं, जहाँ गरीब, आदिवासी और दलित न केवल शोषण का शिकार हैं, बल्कि उनकी आवाज को निरममता से कुचला जाता है। 'रूदाली' में राजस्थान की उन औरतों की मार्मिक कथा है, जो दूसरों के मृतकों पर आँसू बहाने का पेशा करती थीं, मगर अपनी पीड़ा को सोने में दफनाए रखती थीं। 'हजार चौरासी की माँ' एक माँ की व्यक्तित्व त्रासदी के जरिए नक्सल आंदोलन और सत्ता की क्रूरता को उघाड़ती है। 'अरण्ये अधिकांश' में बिरसा मुंडा के नेतृत्व में आदिवासियों के विद्रोह को अमर किया गया, जिन्होंने औपनिवेशिक और सामंती जंजीरों को तोड़ने की जंग लड़ी। इन रचनाओं ने साहित्यिक जगत में तूफान खड़ा किया और सामाजिक चेतना को झकझोरकर जागृत किया।

महाश्वेता देवी की लेखनी केवल किताबों तक सीमित नहीं थी; वह एक आंदोलन थी, जो जमीनी हकीकत से उपजी थी। वे पश्चिम बंगाल, झारखंड और बिहार के घने जंगलों में बसे संथाल, मुंडा और लोहार जैसे आदिवासी समुदायों के बीच गईं, उनके

दुःख-दर्द को जिया, और उनकी लड़ाई को अपनी कलम और कर्म से सशक्त किया। 1980 के दशक में उन्होंने 'देनोति सभा' और 'पश्चिम बंगा खेत मजदूर समिति' जैसे संगठनों के साथ मिलकर बंधुआ मजदूरी के खिलाफ निर्णायक संघर्ष छेड़ा। पलाय (झारखंड) में 1990 के दशक में उनके अभियानों ने सैकड़ों बंधुआ मजदूरों को गुलामी की बँडियों से मुक्ति दिलाई। आदिवासियों के वन अधिकार, जमीन के हक और शिक्षा के लिए उनकी लड़ाई ने समाज के सबसे हाशिए पर पड़े लोगों में नई उम्मीद जगाई। उनके इस अथक कार्य को संयुक्त राष्ट्र तक ने सराहा।

महाश्वेता देवी का व्यक्तित्व एक अनूठा संगम था—एक ओर कोलकाता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य की विष्णु प्रोफेसर, दूसरी ओर जंगलों की धूल भरी पगडंडियों पर नंगे पाँव चलने वाली क्रांतिकारी। उनकी विनम्रता और निर्भीकता का मेल अनुपम था। सत्ता, चाहे वह औपनिवेशिक शासकों की हो या स्वतंत्र भारत की नैकरशाही, उनके सामने कभी टिक नहीं सकी। उन्होंने सच को न केवल उजागर किया, बल्कि उसे अपनी लेखनी का हथियार बनाया, भले ही इसके लिए उन्हें तीखी आलोचनाएँ मिलीं न सही। पढ़ीं—उनकी पत्रिका 'बर्तिका' हाशिए पर जी रहे आदिवासी और वंचित समुदायों की दमदार आवाज बनी। इस मंच के जरिए उन्होंने न केवल अपनी रचनाएँ उकेरीं, बल्कि



आदिवासियों को अपनी कहानियाँ स्वयं लिखने के लिए प्रेरित किया, उनकी चेतना को नई उड़ान दी। उनके अतुलनीय योगदान को अनेक सम्मानों से नवाजा गया। 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1996 में ज्ञानपीठ पुरस्कार, 1986 में पद्मश्री और 2006 में पद्मविभूषण उनके साहित्यिक और सामाजिक अवदानों की गवाही देते हैं। 1997 में रैमोन मैग्सेसे पुरस्कार ने उनकी पत्रकारिता और सामाजिक कार्यों को वैश्विक पहचान दी। लेकिन महाश्वेता देवी के लिए ये सम्मान महज औपचारिकताएँ थे। उन्होंने कहा था, "मेरा असली पुरस्कार वह दिन होगा, जब हर आदिवासी को उसकी जमीन, उसका हक और उसका गरिमा वापस मिलेगी।" यह उद्घोष उनके जीवन के मिशन का प्राण था—एक ऐसी आग जो अन्याय के खिलाफ जलती रही।

28 जुलाई 2016 को, 90 वर्ष की आयु में,

कोलकाता में उन्होंने अंतिम साँस ली। उनके साथ एक युवा का सूरज डूबा, मगर उनकी विरासत आज भी उज्ज्वल मशाल की तरह जल रही है। आज, जब भारत के आदिवासी समुदाय विस्थापन, जमीन अधिग्रहण और पर्यावरण विनाश की त्रासदी झेल रहे हैं, महाश्वेता देवी की लेखनी और उनका संघर्ष पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है। 2023 के पर्यावरण मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि भारत की 104 मिलियन आदिवासी आबादी, जो कुल जनसंख्या का 8.6% है, आज भी अपनी जमीन और संसाधनों से वंचित है। 2006 का वन अधिकार अधिनियम लागू होने के बावजूद, 2022 तक केवल 2.2 मिलियन व्यक्तिगत और सामुदायिक दावों को ही मंजूरी मिली, जबकि लाखों दावें अब भी अधूरे में लटके हैं। यह स्थिति महाश्वेता देवी की लड़ाई की निरंतरता को चीख-चीखकर बयान करती है। उनकी लेखनी और आंदोलन आज भी हमें पुकारते

हैं—न्याय और हक की इस जंग को और तेज करने की प्रेरणा देते हैं।

महाश्वेता देवी की पुण्यतिथि हमें न केवल उनकी स्मृति में झुकने को प्रेरित करती है, बल्कि एक अटल संकल्प की माँग करती है कि हम उनके साहित्य को न सिर्फ पढ़ें, बल्कि उसे अपने जीवन का मशाल बनाएँ और समाज के सबसे दवे-कुचले वर्गों के लिए लड़ें। उनकी रचनाएँ हमें सिखाती हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी हथियार है, जो अन्याय की नींव को हिला सकता है। 'अरण्ये अधिकांश' में बिरसा मुंडा की तरह हमें जूझना है—हर उस जंगल में, हर उस गाँव में, हर उस दिल में, जो अन्याय के खिलाफ विद्रोह की आग जलाए रखता है। यही एक सच्चे साहित्यकार की अमर विजय है—मृत्यु को भी परास्त कर, विचार बनकर, आंदोलन बनकर, क्रांति की लौ बनकर सदा जीवित रहना।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

क्या छात्र-छात्राओं की खुदकुशी पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता से शिथिल प्रशासनिक मिशनरी में कोई नई हलचल पैदा होगी?

कमलेश पांडे

देश के शिक्षण संस्थानों में छात्र-छात्राओं (स्टूडेंट्स) की आत्महत्या और उनमें बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य (मेंटल हेल्थ) की समस्याओं पर माननीय सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) ने शुक्रवार को जो चिंता जताई है, वह आकारण नहीं है बल्कि इसके पीछे उन हजारों परिवारों और लाखों लोगों की बेदना छिपी हुई है जो ऐसे मामलों में अपने परिजनों को गंवा चुके हैं। इन घटनाओं में कोई बचपन में ही अनाथ हो गया तो कोई बुढ़ापे में बेसहारा। इसलिए सुलगाता हुआ सवाल है कि क्या छात्र-छात्राओं की खुदकुशी पर सुप्रीम कोर्ट की चिंता से शिथिल प्रशासनिक मिशनरी में कोई नई हलचल पैदा होगी? या फिर उसकी यह पहलकदमी भी नक्कारखाने में तूती की आवाज मानिंद दबी रह जायेगी।

बता दें कि ऐसा बिल्कुल नहीं कि केंद्र व राज्य सरकारें इन घटनाओं से अनजान हैं, बल्कि उसने तो 1960 के दशक में ही इन मामलों में संजीदगी दिखाई और राष्ट्रीय अपराध रिपोर्टिंग ब्यूरो (एनसीआरबी) ने वर्ष 1966 से ही भारत में आकस्मिक मृत्यु और आत्महत्या (एडीएसआई) रिपोर्ट जारी करनी शुरू कर दिए। तत्पश्चात आत्महत्या के कारणों और उससे बचने के उपायों पर ब्रेक के बाद आत्ममंथन किया गया लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात निकले और देश में आत्महत्या के मामलों में हाल के वर्षों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

यही वजह है कि गत दिनों माननीय सर्वोच्च न्यायालय को यह कहना पड़ा कि आत्महत्या की रोकथाम के लिए देश में कोई माकूल कानून नहीं है। बहरहाल इसे देखते हुए कोर्ट ने 15 गाइडलाइंस जारी की जो तब तक पूरे देश में लागू और बाध्यकारी होंगी, जब तक कि कोई स्पष्ट व पारदर्शी कानून इस बारे में नहीं बन जाता है। कोर्ट के मुताबिक, यदि शासनादेश (गाइडलाइंस) सभी सरकारी, सार्वजनिक व प्राइवेट स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, प्रशिक्षण और कोचिंग संस्थानों और छात्रावासों (होस्टलों) पर लागू होंगे, चाहे वे किसी भी बौद्धिक/विद्यार्थ्यालय से संबद्ध हों।

उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट ने नीट (NEET) की तैयारी कर रही 17 वर्षीय छात्रा की संदिग्ध हत्यात में मौत के मामले में सुनवाई करते हुए ये गाइडलाइंस जारी की। साथ ही, छात्रा की मौत की सीबीआई से जांच कराने का भी आदेश दिया है। कोर्ट का यह कहना सही है कि जब तक तत्सम्बन्धी कानून नहीं बनये, तब तक उसके नए दिशानिर्देश लागू रहेंगे। इसके अलावा मेंटल हेल्थ

नीति भी सबके लिए बनानी होगी। उसने दो टुक कहा कि सभी शिक्षण संस्थान यूनिफॉर्म मेंटल हेल्थ पॉलिसी अपनाएंगे और इसे अपने सूचना पट और वेबसाइट पर जारी करेंगे। इसके अलावा, एक सौ से अधिक (100+) छात्रों वाले संस्थानों में मेंटल हेल्थ प्रफेशनल जैसे- ट्रेड कार्डसलर, सायकायट्रिस्ट को रखना होगा। इसके लिए वे दक्ष प्रफेशनल नियुक्त करें।

इन्हें स्टूडेंट-कार्डसलर अनुपात का भी ध्यान रखना होगा यानी इनके यहां छोटे छोटे बैचों में समर्पित कार्डसलर नियुक्त हो, जिनसे एग्जाम में सहयोग मिल सके। वहीं, सुरक्षा उपाय भी करने होंगे जिसके तहत हॉस्टल की छतों, बालकनी और पंखों जैसी जगहों पर सुरक्षा उपायकरण लगाने होंगे। कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया है कि कोचिंग सहित सभी संस्थान अत्यवहारिक बैच विभाजन नहीं करें, खासकर प्रदर्शन के आधार पर। कहने का तात्पर्य यह कि सभी संस्थान प्रदर्शन के आधार पर छात्रों को अलग अलग बैच में डालने से बचें क्योंकि इससे छात्रों में कुंठा की भावना पैदा होती है।

इसके अलावा, कोर्ट ने किसी भी तरह के उत्पीड़न पर कठोर रुख अपनाया है और जाति, लिंग, धर्म, दिव्यांगता, की शिक्षायात का मेकैनिजम बनाने का निर्देश दिया है। खासकर यौन आधार पर उत्पीड़न के प्रयासों पर त्वरित संजीदगी दिखाने को कहा है। कोर्ट ने इमरजेंसी में हेल्प प्रदान करने की भी बात कही है और संस्थानों में अस्पताल, हेल्पलाइन के नंबर स्पष्ट अक्षरों में प्रदर्शित किए जाने के निर्देश दिए हैं। वहीं, सभी संस्थाओं के स्टाफ ट्रेनिंग पर जोर देते हुए सुझाव दिया है कि कर्मचारियों को साल में कम से कम दो बार ट्रेड मेंटल हेल्थ प्रफेशनल से ट्रेनिंग दी जाए।

इसके अलावा, अभिभावकों (पैरेंट्स) में भी जागरूकता लायी जाए। इस जरूरिए से माता-पिता के लिए जागरूकता सेशन करें और उन्हें बच्चों में अत्यधिक प्रेशर न डालने को कहे। यदि यह सबकुछ कर लिया गया तो निःसन्देह ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ रोकी जा सकती हैं।

गौरतलब है कि राष्ट्रीय अपराध रिपोर्टिंग ब्यूरो (एनसीआरबी) ने वर्ष 2022 के लिए भारत में आकस्मिक मृत्यु और आत्महत्या (एडीएसआई) रिपोर्ट जारी की थी जिससे जुड़ी एडीएसआई रिपोर्ट ही आत्महत्या से होने वाली मौतों पर देश में एकमात्र सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटासेट है। बताते चलें कि 1966 में पहली बार प्रकाशित एडीएसआई (ADSI) की रिपोर्ट के बाद से आत्महत्या की दर में नाटकीय वृद्धि देखी गई है। साल 2022 में तो

आत्महत्या की दर 2021 से 4.2% बढ़कर 08 से 12.2 प्रतिशत 100,000 जनसंख्या (1,64,033 से 1,70,924) हो गई, जो 56 वर्षों में दर्ज की गई सर्वाधिक उच्चतम दर है।

इसी वर्ष यानी 2022 में ही भारत सरकार ने राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम रणनीति शुरू की, जो आत्महत्या रोकथाम के लिए एक देशव्यापी दृष्टिकोण को स्पष्ट करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। इस रणनीति में 2020 के आधार वर्ष की तुलना में आत्महत्या से होने वाली मौतों में 10% की कमी लाने का स्पष्ट लक्ष्य रखा गया है। हालाँकि, दर में तीव्र वृद्धि से इस लक्ष्य को प्राप्त करने में अंतर बढ़ गया है।

इस वर्ष के आंकड़ों से कुछ उल्लेखनीय अवलोकन से पता चलता है कि आत्महत्या के पीछे उम्र, क्षेत्र और पेशे भी कारक बन रहे हैं, इसलिए छात्र जीवन से ही इन पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है। जहाँ तक आत्महत्या और उम्र का सवाल है तो आंकड़े इस बात की चुगली करते हैं कि सभी आयु समूहों में आत्महत्या की दर औसतन 5 प्रतिशत बढ़ी है। वहीं, 18 वर्ष से कम आयु के युवाओं को छोड़कर, जिनकी आत्महत्या दर में मामूली गिरावट देखी गई।

वहीं, 2022 में कुल आत्महत्याओं में 18-30 वर्ष की आयु के युवा वयस्कों की हिस्सेदारी 35 प्रतिशत थी, जो सबसे बड़ी हिस्सेदारी थी। इसके बाद 30 से 45 वर्ष की आयु के वयस्कों का स्थान था, जिनकी हिस्सेदारी कुल आत्महत्याओं के अनुपात में 32 प्रतिशत थी। जबकि देश में आत्महत्या से होने वाली मौतों में दोनों आयु समूहों का संयुक्त योगदान 67 प्रतिशत है।

वहीं, आत्महत्या और भूगोल यानी क्षेत्र का भी गहरा सम्बन्ध है। इसलिए देश भर में आत्महत्या की दर में काफी भिन्नता है। जहाँ बिहार में यह दर प्रति 100,000 जनसंख्या पर 0.6 है तो यह सिक्किम में प्रति 100,000 जनसंख्या पर 43.1 तक पहुँच गया है। यह भिन्नता महत्वपूर्ण थी और छोटे राज्यों या केंद्र शासित प्रदेशों में सबसे अधिक स्पष्ट थी जहाँ जनसंख्या कम है जिसके परिणामस्वरूप रिपोर्ट की गई दरें अधिक थीं।

वहीं, भौगोलिक दृष्टि से बड़े और अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में केरल में प्रति 100,000 जनसंख्या पर 28.5 की दर सबसे अधिक थी, उसके बाद छत्तीसगढ़ में 28.2 और फिर तेलंगाना में 26.2 थी। वहीं, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश, जो पूर्ण संख्या के आधार पर शीर्ष तीन राज्य हैं, सामूहिक रूप से देश में होने वाली सभी आत्महत्याओं का एक तिहाई हिस्सा हैं और इनकी



आत्महत्या दर क्रमशः 18.1, 25.9 और 17.9 है।

इसप्रकार, आत्महत्या में सबसे ज्यादा वृद्धि मिजोरम में हुई जहाँ 2021 और 2022 के बीच आत्महत्याओं में 54.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। पूर्वोत्तर में पड़ोसी राज्य मणिपुर में सबसे ज्यादा 47 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। छोटे राज्यों में आत्महत्याओं की कुल संख्या में काफी अंतर होने की संभावना है। वहीं, बड़े राज्यों में, हिमाचल प्रदेश में आत्महत्याओं की रिपोर्ट में उल्लेखनीय गिरावट आई है, जो 2021 और 2022 के बीच 28 प्रतिशत कम हो गई है। बिहार, पश्चिम बंगाल और पंजाब में भी आत्महत्याओं में क्रमशः 15 प्रतिशत, 6.2 प्रतिशत और 6.1 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है।

जबकि, आत्महत्याओं में सबसे ज्यादा वृद्धि उत्तर प्रदेश में देखी गई, जो एक घनी आबादी वाला राज्य है, जहाँ आत्महत्याओं में 38 प्रतिशत की वृद्धि हुई। तीसरी सबसे ज्यादा वृद्धि जम्मू-कश्मीर में हुई, जहाँ यह वृद्धि 31 प्रतिशत रही, उसके बाद झारखंड में 19.5 प्रतिशत रही।

जहाँ तक आत्महत्या के बताए गए कारण का सवाल है तो यह कहना उचित होगा कि आत्महत्याएँ किसी एक कारण से नहीं होतीं। और न ही ये सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यवस्थागत और आर्थिक कारकों से अलग, शून्य में होती हैं। जबकि आत्महत्या पर एनसीआरबी की रिपोर्टें ब्रामक रूप से मौतों का एक ही कारण बताती हैं। लगभग 75 प्रतिशत आत्महत्याएँ निम्नलिखित कारणों से होती

हैं। पारिवारिक समस्याएँ और शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति के कारण उत्पन्न संकट, आत्महत्या के सभी कारणों में से 50 प्रतिशत से अधिक के लिए जिम्मेदार हैं। विवाह और रिश्तों से जुड़ी चिंताओं को मिलाकर मृत्यु का तीसरा कारण बताया गया। यह उन कुछ कारणों में से एक था जहाँ पुरुषों में आत्महत्या से होने वाली मौतों की संख्या महिलाओं में आत्महत्या से होने वाली मौतों के लगभग बराबर थी। और दहेज संबंधी कारणों से, महिलाओं में आत्महत्या से होने वाली मौतें पुरुषों से ज्यादा थीं।

वहीं, शराब और मादक पदार्थों का सेवन तथा आर्थिक और वित्तीय असुरक्षा (श्रमा, गरीबी और बेरोजगारी) दोनों ही आत्महत्या से होने वाली 14 प्रतिशत मौतों का कारण थे। चिंताजनक बात यह है कि शराब और मादक पदार्थों के सेवन के कारण आत्महत्या से होने वाली मौतों में 2021 से 2022 तक सबसे अधिक वृद्धि देखी गई, जो 10 प्रतिशत तक बढ़ गई।

जहाँ तक आत्महत्या और व्यवसाय के सम्बन्धों का सवाल है तो आंकड़े बताते हैं कि इनका भी इससे गहरा सम्बन्ध है एनसीआरबी आत्महत्या से मरने वाले लोगों के पेशे पर रिपोर्ट करता है। सभी आत्महत्याओं में से लगभग 77 प्रतिशत छह पेशेवर श्रेणियों में होती हैं। पिछले साल की तरह, इस साल भी आत्महत्या से होने वाली सभी मौतों में एक-चौथाई से ज्यादा हिस्सा दिहाड़ी मजदूरों का है, जो

पिछले साल से 8 प्रतिशत ज्यादा है। एनसीआरबी द्वारा गृहणियों को दूसरे सबसे ऊंचे वर्ग में वर्गीकृत किया गया था। इस व्यापक समूह में कुल आत्महत्याओं का 15 प्रतिशत हिस्सा था और 2021 से 2022 तक इसमें 9 प्रतिशत की सबसे बड़ी वृद्धि भी देखी गई। वहीं, स्व-रोजगार करने वालों में आत्महत्या की दर कुल आत्महत्याओं की संख्या का 11 प्रतिशत थी जो तीसरे स्थान पर थी, उसके बाद वेतनभोगी लोगों में यह दर 10 प्रतिशत थी। वेतन पाने वालों में आत्महत्या की दर पिछले वर्ष की तुलना में 3 प्रतिशत बढ़ी। वहीं, कुल आत्महत्याओं में बेरोजगार लोगों और छात्रों दोनों की हिस्सेदारी 8 प्रतिशत थी।

इस प्रकार साल 2022 में भारत में आत्महत्या की दर एक नए शिखर पर पहुँच गई। वहीं, वर्ष 2024 में भी आत्महत्या की घटनाओं में वृद्धि हुई। इस साल हुई कुल 1388 मौतों में 612 आत्महत्या की घटनाएँ हुई हैं। जबकि इससे एक साल पहले भी 515 आत्महत्या की घटनाएँ हुई थीं। इससे पूरे देश में फैली इस मानसिक महामारी की जटिल स्थिति का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। इस बात में कोई दो राय नहीं कि आत्महत्या के कारण मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक तनाव, आर्थिक समस्याएँ और सामाजिक दबाव हैं। इसलिए देश में आत्महत्या की घटनाओं में भी बड़ी वृद्धि देखने को मिली है।

यह कड़वा सच है कि यदि इस समय कोई तत्काल और ठोस कार्रवाई नहीं की गई, तो यह दर और भी ज्यादा बढ़ने की आशंका है। इसलिए एक समर्पित आत्महत्या रोकथाम रणनीति सही दिशा में एक कदम है। लेकिन जैसा कि आंकड़े दर्शाते हैं, वास्तविक बदलाव लाने के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में हस्तक्षेप की आवश्यकता है। ऐसे हस्तक्षेप प्रत्येक क्षेत्र के विशिष्ट संदर्भ के अनुरूप होने चाहिए, व्यापक उप-राष्ट्रीय योजनाओं की आवश्यकता होनी चाहिए और महत्वपूर्ण प्रणालीगत, सामुदायिक, पारस्परिक और सामाजिक गतिशीलता को संबोधित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों और हितधारकों को भागीदारी की आवश्यकता होनी चाहिए। तब तक, एनएसपीएस के अंतर्गत निर्धारित लक्ष्य को पूरा करना एक दूरगामी लक्ष्य बना रहेगा। इसलिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने सटीक समय पर अपनी टिप्पणी की और नए दिशानिर्देश जारी किए। इससे उम्मीद है कि शिथिल प्रशासनिक मिशनरी में गति आएगी।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

विश्व हेपेटाइटिस दिवस: एक दिन नहीं, हर दिन का अभियान

[हेपेटाइटिस: वह खतरा जो दिखता नहीं, पर मिटा देता है]

एक अदृश्य हत्यारा, जो बिना आवाज़ किए लाखों जिंदगियों को निगल जाता है। वह चुपके से जिगर को खोखला करता है, सपनों को कुचल देता है, और परिवारों को बिखेर देता है। यह है हेपेटाइटिस—एक ऐसी बीमारी, जो न दर्द की चेतावनी देती है, न ही कोई आहट। जब तक इसका पता चलता है, तब तक बहुत कुछ सिन चुका होता है। हर साल 28 जुलाई को मनाया जाने वाला विश्व हेपेटाइटिस दिवस हमें इस खामोश शत्रु के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान करता है। यह दिन केवल जागरूकता का प्रतीक नहीं, बल्कि एक संकल्प है—एक स्वस्थ, हेपेटाइटिस-मुक्त विश्व के निर्माण का। यह उन लाखों लोगों की पुकार है, जो इस बीमारी से जूझ रहे हैं, और उन अनगिनत परिवारों की उम्मीद, जो अपने प्रियजनों को खो चुके हैं। हेपेटाइटिस यकृत (लिवर) की सूजन है, जो मुख्य रूप से पांच प्रकार के वायरस, A, B, C, D और E, के कारण होती है। इनमें से हेपेटाइटिस B और C सबसे खतरनाक हैं, जो विश्व स्तर पर लिवर सिरोसिस और लिवर कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों का कारण बनते

हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के 2024 के आंकड़ों के अनुसार, विश्व में लगभग 35.4 करोड़ लोग हेपेटाइटिस B और C से पीड़ित हैं, और हर साल करीब 13 लाख लोग इस बीमारी के कारण अपनी जान गंवाते हैं। भारत में स्थिति और भी चिंताजनक है, जहाँ अनुमानित 4 करोड़ लोग हेपेटाइटिस B और 1.2 करोड़ लोग हेपेटाइटिस C से प्रभावित हैं। सबसे दुःखद पहलू यह है कि इनमें से 80% से अधिक लोगों को अपनी बीमारी का पता तब तक नहीं चलता, जब तक यकृत को गंभीर क्षति न हो जाए। यह एक ऐसी बीमारी है जो चुपके से हमला करती है, और जब तक लक्षण जैसे त्वचा का पीलापन (जॉन्डिस), थकान, भूख न लगना, या पेट दर्द उभरते हैं, तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। हेपेटाइटिस का प्रसार कई रूपों में होता है। हेपेटाइटिस A और E दूषित भोजन और पानी के माध्यम से फैलते हैं, जो खराब स्वच्छता और अपायुक्त जल प्रबंधन का परिणाम हैं। वहीं, हेपेटाइटिस B और C का प्रसार संक्रमित रक्त, असुरक्षित यौन संबंध, साझा सुइयों, असुरक्षित चिकित्सा प्रक्रियाओं और जन्म के दौरान माता से शिशु में होता है। हेपेटाइटिस D केवल हेपेटाइटिस B से संक्रमित लोगों को प्रभावित करता है, जिससे बीमारी और जटिल हो जाती

है। इस बीमारी की सबसे बड़ी चुनौती इसकी मौन प्रकृति है। शुरुआती लक्षण इतने सामान्य होते हैं—थकान, हल्का बुखार, भूख में कमी—कि लोग इन्हें नजर अंदाज कर देते हैं। जब गंभीर लक्षण सामने आते हैं, तब यकृत को अप्रुणीय क्षति हो चुकी होती है, और इलाज की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। विश्व हेपेटाइटिस दिवस का उद्देश्य इस बीमारी के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना, जांच और उपचार को बढ़ावा देना, और इसे समाप्त करने की दिशा में ठोस कदम उठाना है। डब्ल्यूएचओ ने 2030 तक वायरल हेपेटाइटिस को एक प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरों के रूप में समाप्त करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इसके लिए तीन प्रमुख रणनीतियाँ अपनाई गई हैं: टीकाकरण, सुरक्षित चिकित्सा प्रथाएँ, और प्रभावी उपचार तक पहुँच। हेपेटाइटिस B का टीका, जो 1982 में विकसित हुआ, इस दिशा में एक चरमदंड है। यह टीका 95% से अधिक प्रभावी है और नवजात शिशुओं को जन्म के 24 घंटों के भीतर पहला डोज देना अनिवार्य है। भारत में राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के तहत यह टीका मुफ्त उपलब्ध है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी इसे प्रभावी बनाने में बाधा डालती है। हेपेटाइटिस C के लिए कोई

टीका उपलब्ध नहीं है, लेकिन प्रत्यक्ष-अभिनय एंटीवायरल दवाएँ 95% से अधिक मामलों में पूर्ण इलाज प्रदान करती हैं। हालाँकि, इन दवाओं की उच्च लागत और जांच तक सीमित पहुँच अभी भी एक बड़ी चुनौती है। भारत में हेपेटाइटिस के खिलाफ लड़ाई कई बाधाओं से जूझ रही है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की असमानता, असुरक्षित रक्त आधान, और सामाजिक कलंक इस बीमारी के प्रसार को बढ़ाते हैं। कई लोग डर, शर्मिंदगी, या जानकारी के अभाव में जांच से बचते हैं। विशेष रूप से नशीली दवाओं का इन्जेक्शन लेने वाले लोग और असुरक्षित यौन संबंधों में लिप्त लोग इस बीमारी के उच्च जोखिम में हैं, लेकिन सामाजिक बहिष्कार के कारण वे स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रह जाते हैं। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की कमी और दूषित पानी हेपेटाइटिस A और E के प्रसार को बढ़ावा देता है। इन सभी चुनौतियों का समाधान केवल सरकारी नीतियों या स्वास्थ्यकर्मियों के प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए समाज के हर वर्ग—चाहे वह शिक्षक हों, छात्र हों, या सामुदायिक नेता—को लगातार फैलाने और सक्रिय भागीदारी निभाने की जरूरत है। विश्व हेपेटाइटिस दिवस 2025 की थीम,

रहेपेटाइटिस को समझें, इसे मिटाने के लिए अभी कदम उठाएं, हमें इस खामोश हत्यारे के खिलाफ तत्काल कार्रवाई का आह्वान देती है। यह एक जागृति की पुकार है, जो हर व्यक्ति को इस बीमारी से लड़ने के लिए प्रेरित करती है। स्कूलों, कॉलेजों और गांवों में जागरूकता अभियान, स्वास्थ्य शिविर और उपचार के जरिए जागरूकता का प्रसार इस दिशा में निर्णायक कदम हो सकता है। स्वास्थ्यकर्मियों को हर मरीज में लक्षणों की गहन जांच और समय पर निदान को प्राथमिकता देनी होगी, क्योंकि एक क्षण की देरी जानलेवा हो सकती है। भारत सरकार का राष्ट्रीय वायरल हेपेटाइटिस नियंत्रण कार्यक्रम (एनवीएफसीपी), जो 2018 में शुरू हुआ, मुख्य शिविर और उपचार के जरिए लाखों जिंदगियों को बचा रहा है। लेकिन असली जीत तब होगी, जब हर नागरिक इस मिशन में शामिल हो और हेपेटाइटिस को जड़ से उखाड़ने का संकल्प ले। यह लड़ाई हमारी है, और समय अभी है। हेपेटाइटिस केवल एक शारीरिक बीमारी नहीं है, यह सामाजिक और आर्थिक बोझ भी लाती है। इस बीमारी से प्रभावित परिवार अक्सर इलाज के खर्च, सामाजिक बहिष्कार, और समय से मानसिक तनाव से जूझते हैं। एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए जरूरी है कि हम इस बीमारी

को गंभीरता से लें और इसे सामाजिक चर्चा का हिस्सा बनाएं। विश्व हेपेटाइटिस दिवस हमें यह मौका देता है कि हम न केवल अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग हों, बल्कि अपने समुदाय को भी शिक्षित करें। आज, जब विज्ञान ने हमें टीकाकरण, प्रभावी दवाएँ, और जागरूकता के लिए डिजिटल मंच जैसे साधन दिए हैं, तब यह और भी दुःखद है कि हम इस बीमारी के सामने हार रहे हैं। हर साल लाखों लोग सिर्फ इसलिए मर रहे हैं, क्योंकि हमने समय पर कदम नहीं उठाया। यह समय है कि हम इस खामोश हत्यारे के खिलाफ एकजुट हों। अपने और अपनों के लिए जांच करवाएँ, टीकाकरण को अपनाएँ, और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें। विश्व हेपेटाइटिस दिवस एक तारीख से कहीं अधिक है—यह एक संकल्प है, एक जिम्मेदारी है, और एक मौका है कि हम उन लाखों जिंदगियों को बचा सकें जो अभी भी इस बीमारी की चपेट में हैं। इस 28 जुलाई को हम यह प्रतिज्ञा करें कि हम इस खतरों को जड़ से उखाड़ फेंकेगे। क्योंकि जब बात जीवन की हो, तो चुप रहना सबसे बड़ा अपराध है। जानकारी, सतर्कता, और समय पर कार्रवाई—यही वह हथियार है जो हमें इस लड़ाई में विजयी बनाएगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

स्वामी शिवानंद ने बदल दी डॉ. कलाम की जीवन दिशा

कुमार कृष्ण

तारीख थी 27 जुलाई, साल था 2015... और शिवानंदल चुकी थी भारतीय छात्रों... शिवानंद, शिवानंद का एक सभागार छात्रों से भरा पड़ा था। मंच से एक जाने-माने शख्स सबको संबोधित कर रहे थे लेकिन तभी अचानक खामोश हो गए। अचानक लड़खड़ा कर गिरे तो उठ नहीं पाए। बाद में खबर आई तो निधन की। ये कोई और नहीं बल्कि मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम थे, जिन्होंने जीवन भर देश को शक्ति संपन्न और आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा।

स्वामी शिवानंद की मुलाकात ने उनकी जीवन की दिशा बदल डाली। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम मानसिक शांति की खोज में स्वामी शिवानंद के आश्रम पहुँचे। स्वामीजी का भव्य व्यक्तित्व देखकर कलाम बहुत प्रभावित हुए। जब उन्होंने स्वामीजी को अपना परिचय दिया तो वे बड़े स्नेह से उनसे मिले। कलाम ने उस भेंट के विषय में एक जगह लिखा है— 'मैंने मुस्लिम नाम की उनमें जरा भी प्रतिक्रिया नहीं हुई। मैंने उन्हें वायुसेना में अपने नहीं चुने जाने की असफलता के विषय में बताया तो वे बोले- इच्छा, जो तुम्हारे हृदय और अंतर्दाम से उत्पन्न होती है, जो शुद्ध मन से की गई हो, एक विस्मृत कर देने वाली विद्युत चुंबकीय

ऊर्जा होती है। यही ऊर्जा हर रात को आकाश में चली जाती है और हर सुबह ब्रह्मांडीय चेतना लिए वापस शरीर में प्रवेश करती है। अपनी इस दिव्य ऊर्जा पर विश्वास रखो और अपनी निर्यतिकी स्वीकार कर इस असफलता को भूल जाओ। निर्यतिकी तुम्हारा पायलट बनना मंजूर नहीं था, अतः असमंजस और दुःख से निकलकर अपने लिए सही उद्देश्य की तलाश करो। स्वामी शिवानंद के शब्दों ने जादू-सा असर दिखाया और कलाम ने दिल्ली आकर डीटीडीएंडपी जाकर अपने साक्षात्कार का नतीजा पता किया। नतीजा उनके पक्ष में था और वे वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक के पद पर नियुक्त हुए। आगे चलकर वे देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। कभी इच्छा, संकल्प और प्रयत्न के बावजूद भाग्य साथ नहीं देता है, किंतु इससे निराशा होने के स्थान पर स्थिर चित्त से विचार कर कार्य-दिशा कुछ परिवर्तित करके हनुमंत प्रभावित हुए। जो खराब स्वच्छता और अंततः सफलता अवश्य मिलती है। डॉ. कलाम ने अपनी किताब 'अग्नि की उड़ान' और 'माय जर्नी: ट्रांसफॉर्मिंग ड्रीम्स इन टू एक्शन' में इस वाक्य का जिक्र किया है। राष्ट्रपति बनने के बाद वे दाब मुंजर आए और बिहार योग विद्यालय में प्रज्ज्वलित स्वामी शिवानंद जी की अर्खंड ज्योति का साक्षात्कार किया। वे यहां राष्ट्रपति नहीं एक शिष्य की तरह पधारे। वे

आजन्म गुरुओं के शिष्य बने रहे। कलाम साहब आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं लेकिन, उनकी आवाज आज भी स्कूलों में, किताबों में, मिसाइल प्रक्षेपणों में और हर उस युवा के सपनों में गुंजती है, जो कुछ बड़ा करना चाहता है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का पूरा नाम डॉ. अबुल पकिर जैनुलब्दीन अब्दुल कलाम है। कलाम का जीवन कोई साधारण कहानी नहीं है। यह उस मछुआरे के बेटे की गाथा है, जिसने रामेश्वरम की गलियों से चलकर राष्ट्रपति भवन की दरहलीज तक का सफर तय किया और मिसाइल तकनीक से लेकर बच्चों के मन तक में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनका जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के एक छोटे से गांव रामेश्वरम में हुआ। उनके पिता ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन जीवन की सच्ची शिक्षा कलाम साहब ने उन्हीं से सीखी और वह थी ईमानदारी, परिश्रम और दूसरों की सेवा। कलाम साहब ने अपनी आत्मकथा विंग्स ऑफ फायर में इसका जिक्र भी किया है। कलाम साहब ने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से एगरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की और फिर अपने जीवन के प्रत्यक्षीकरण के यत्न में समर्पित कर दिया। डीआरडीओ में होवरक्राफ्ट पर काम करते हुए उन्होंने जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण सीखा, वह आगे चलकर इसरो में एक महान

परिवर्तन का कारण बना। वहां उन्होंने भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एस्पलवी-3 विकसित किया जिससे 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। यह क्षण भारत के अंतरिक्ष इतिहास में मौल का पत्थर था। यहीं से कलाम साहब को मिसाइल मैन का नाम मिला जो उन्हें अमर कर गया। उन्होंने पृथ्वी और अग्नि जैसे स्वदेशी मिसाइल विकसित किए। उन्होंने न सिर्फ भारत को मिसाइल तकनीक में आत्मनिर्भर बनाया बल्कि सामरिक दृष्टि से आत्मगौरव और आत्मविश्वास से भर दिया। 1998 के पोखरण परमाणु परीक्षणों में उनकी भूमिका रणनीतिक और निर्णायक रही। एक वैज्ञानिक के रूप में वे केवल प्रयोगशाला के भीतर सीमित नहीं रहे। वे नीति, सुरक्षा और तकनीकी दृष्टिकोण से देश के भविष्य की नींव रख रहे थे। प्रौद्योगिकी सूचना, पूर्वानुमान और मूल्यांकन परिषद (टीआईएफसी) के अध्यक्ष और एक प्रख्यात वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने 500 विशेषज्ञों की मदद से देश का नेतृत्व करते हुए प्रौद्योगिकी विजन 2020 पर पहुंचकर भारत को वर्तमान विकासशील स्थिति से विकसित राष्ट्र में बदलने का रोडमैप प्रस्तुत किया। डॉ. कलाम ने नवंबर 1999 से

नवंबर 2001 तक कैबिनेट मंत्री के पद पर भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में कार्य किया और कई विकास अनुप्रयोगों के लिए नीतियों, रणनीतियों और मिशनों को विकसित करने के लिए जिम्मेदार रहे। डॉ. कलाम कैबिनेट की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एसएसी-सी) के पदेन अध्यक्ष भी थे और उन्होंने इंडिया मिलेनियम मिशन 2020 का नेतृत्व किया। कलाम साहब की एक और भूमिका भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में रही। 2002 में जब उन्होंने राष्ट्रपति पद की शपथ ली, तब देश को एक ऐसा राष्ट्रपति मिला जो जनता के दिलों में बसता था। उन्होंने राष्ट्रपति भवन को सत्ता का किला नहीं, जनसंपर्क का केंद्र बना दिया। उनकी सादगी, उनके व्याख्यान और आम लोगों के साथ उनके सहज संवाद ने उन्हें जनता का राष्ट्रपति बना दिया। 2007 में राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद भी उनका सफर थमा नहीं। वे विश्वविद्यालयों में पढ़ाते रहे, छात्रों से संवाद करते रहे, और युवाओं को प्रेरणा देते रहे। उन्होंने कई प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं, जो आज भी युवाओं की सोच को दिशा देती हैं और कलाम साहब के विचारों को जीवित रखती हैं। डॉ. कलाम के विचारों में भारत का भविष्य बसता था। एक ऐसा भारत जो तकनीकी रूप से उन्नत हो, आर्थिक रूप से

आत्मनिर्भर हो, और नैतिक रूप से मजबूत हो। अपने साहित्यिक प्रयासों के दौरान, डॉ. कलाम को 2020—एविजन फॉर—दिव्स ऑफ फायर, इंडिया नीतियों, रणनीतियों और मिशनों को विकसित करने के लिए जिम्मेदार रहे। डॉ. कलाम कैबिनेट की वैज्ञानिक सलाहकार समिति (एसएसी-सी) के पदेन अध्यक्ष भी थे और उन्होंने इंडिया मिलेनियम मिशन 2020 का नेतृत्व किया। कलाम साहब की एक और भूमिका भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में रही। 2002 में जब उन्होंने राष्ट्रपति पद की शपथ ली, तब देश को एक ऐसा राष्ट्रपति मिला जो जनता के दिलों में बसता था। उन्होंने राष्ट्रपति भवन को सत्ता का किला नहीं, जनसंपर्क का केंद्र बना दिया। उनकी सादगी, उनके व्याख्यान और आम लोगों के साथ उनके सहज संवाद ने उन्हें जनता का राष्ट्रपति बना दिया। 2007 में राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद भी उनका सफर थमा नहीं। वे विश्वविद्यालयों में पढ़ाते रहे, छात्रों से संवाद करते रहे, और युवाओं को प्रेरणा देते रहे। उन्होंने कई प्रसिद्ध पुस्तकें लिखीं, जो आज भी युवाओं की सोच को दिशा देती हैं और कलाम साहब के विचारों को जीवित रखती हैं। डॉ. कलाम के विचारों में भारत का भविष्य बसता था। एक ऐसा भारत जो तकनीकी रूप से उन्नत हो, आर्थिक रूप से

गुप्तकाशी महेश्वर – शिव की अद्भुत नगरी

प्राचीन माहिष्मती, जिसे आज महेश्वर के नाम से जाना जाता है, केवल महेश्वरी साड़ियों, हस्तशिल्प, व्यापार और केले के उत्पादन के लिए ही विख्यात नहीं है; यह नगर एक गहन आध्यात्मिक और ऐतिहासिक चेतना का केंद्र है। महेश्वर अपने नाम में ही 'महेश' यानी भगवान शिव को समेटे हुए है। यह वही पुण्यभूमि है जो न केवल नर्मदा की कल-कल बहती धारा से अभिषिक्त है, बल्कि शिव के एक गुप्त और दिव्य स्वरूप की भी साक्षी है। यही कारण है कि इसे गुप्तकाशी के नाम से भी जाना जाता है।

काशी विश्वनाथ मंदिर – आत्मा से आलोकित तक की यात्रा
महेश्वर के मध्य स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर शिवभक्तों के लिए एक दिव्य तीर्थ है। यह मंदिर किसी भी साधारण शिवालय से अलग है – यहाँ संगमरमर से बनी श्वेत जलधारी पर विराजित हैं श्यामवर्णी स्वयंभू शिवलिंग। चारों दिशाओं में शिव दरबार की सजीव स्थापना – गणेश जी, माता पार्वती, दुर्गा माता, सूर्य देव और नंदी महाराज के साथ यहाँ लक्ष्मी के वाहन कछुआ भी विशेष रूप से उपस्थित है। यह त्रेतायुगीन, पौराणिक और सनातन व्यवस्था का ऐसा अद्भुत संयोग है, जिसे देखकर भक्त विस्मित हो जाते हैं। यहाँ की सबसे अद्वितीय बात यह है कि नंदी महाराज की प्रतिमा श्यामवर्णी नहीं, बल्कि संगमरमर जैसी श्वेतवर्णी है – एक अत्यंत दुर्लभ

दृश्य। और मंदिर के प्रवेश द्वार पर कछुए की मूर्ति प्रहरी की तरह विराजमान है, जो लक्ष्मी की कृपा और शिव की स्थिरता का प्रतीक मानी जाती है।

गुप्तकाशी – शिव की गुप्त स्थापना की कथा

पुरानी किंवदंतियों के अनुसार, यह वही शिवलिंग है जिसे काशी (चाराणसी) ले जाया जा रहा था। किंतु मार्ग में जब मां नर्मदा के पावन तट पर विश्राम हेतु इस शिवलिंग को रखा गया, तो वह वहीं स्थापित हो गया और कोई भी उसे दोबारा उठाने न सका। तब से यह शिवलिंग स्वयंभू माना गया और यही स्थान गुप्तकाशी कहलाया। शिवभक्त इसे काशी का गुप्त स्वरूप मानते हैं, जहाँ महादेव बिना किसी भी ड-भाड़ या शोर-शराबे के, एकांत में साक्षात् दर्शन देते हैं। यह स्थान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उन्नयन का केंद्र है। यहाँ की प्राचीनता, पवित्रता और विशेष व्यवस्था इसे अन्य शिवधामों से अलग बनाती है।

दिशाओं में देवता – शिव का समग्र स्वरूप

काशी विश्वनाथ मंदिर केवल शिवलिंग तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी परिधि में एक पूर्ण दशों दिशाओं में स्थापित देवमंडल है: उत्तर दिशा में शनि महाराज की शांत मूर्ति विराजित है। उत्तर-पश्चिम दिशा में दक्षिणेश्वर हनुमान जी उपस्थित हैं, जो भक्तों को बल, बुद्धि और विजय का आशीर्वाद देते हैं।



दक्षिण-पश्चिम में काशी विश्वनाथ का एक लघु स्वरूप भी स्थापित है – मानो पूरे काशी का सारांश इस मंदिर में समाया हो। दक्षिण की ओर मां नर्मदा की कलकल धारा बहती है, जो मंदिर परिसर को सदा पवित्र बनाए रखती है। और सबसे अद्भुत दृश्य तब सामने आता है, जब प्रत्येक भोर की पहली किरण सीधे शिवलिंग पर पड़ती है, मानो सूर्य देव स्वयं महादेव का तिलक कर रहे हों।

श्रावण मास में विशेष महिमा
श्रावण मास में इस मंदिर की महिमा और भी विशेष हो जाती है। शिवभक्त दूर-दूर से आकर जलाभिषेक करते हैं। सुबह 11 बजे तक भक्तों को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति रहती है। कोई VIP पास, कोई पंक्ति, कोई रोक-टोक नहीं – बस

शुद्ध सनातनी वस्त्र धारण किए और सीधा गर्भगृह में जाकर स्वयं महादेव को स्पर्श करके जलाभिषेक करिए।

यहाँ उच्च-नीच, जात-पात, धन-बल की कोई दीवार नहीं है। यहाँ सब बराबर हैं, क्योंकि यह शिव की भूमि है और शिव केवल भाव के भूखे हैं। **अहिल्या की आस्था – परंपरा की शिल्पकार**
यह वही भूमि है जहाँ लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर ने अपने हाथों से शिव की प्रतिमा का पूजन किया, उन्हें वस्त्र अर्पित किए, दैनिक रूढ़ाभिषेक करवाया और मंदिर की पुनः स्थापना की। उनके शासनकाल में इस नगरी को शिवभक्ति की राजधानी बना दिया गया। महेश्वर की दिव्यता और आध्यात्मिकता को जीवन्त बनाए रखने में अहिल्या बाई का योगदान अतुलनीय है।

कल्पवृक्ष तुल्य बिल्वपत्र – एक चमत्कारिक परंपरा
महेश्वर के इस काशी विश्वनाथ मंदिर की एक अन्य अद्भुत विशेषता है – यहाँ चढ़ाया जाने वाला बिल्वपत्र।

यह कोई साधारण पत्र नहीं, बल्कि 11 से 15 पट्टियों वाला बिल्वपत्र है, जिसे नाथों के नाथ विश्वनाथ को अर्पित किया जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह कलियुग का कल्पवृक्ष है।

यह विशेष बिल्ववृक्ष मां अहिल्या बाई होल्कर द्वारा अपने हाथों से लगाया गया था, जो अब कई शतकों पुराना हो चुका है। यह वृक्ष आज

भी मंदिर परिसर में जीवित है और उससे प्राप्त बिल्वपत्रों से श्रावण मास में शिव की विशेष पूजा होती है।

भक्तों का विश्वास है कि इस वृक्ष से प्राप्त बिल्वपत्रों से अभिषेक करने से सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, और जीवन में सुख-शांति बनी रहती है।

महेश्वर – केवल व्यापार नहीं, यह भक्ति की राजधानी है

जहाँ एक ओर महेश्वर महेश्वरी साड़ियों, हथकरघा, कला और व्यापार के लिए प्रसिद्ध है, वहीं दूसरी ओर यह गुप्तकाशी जैसी अद्वितीय पहचान भी समेटे हुए है। यह वह नगरी है जहाँ धर्म, दर्शन, संस्कृति, शिल्प और शासन – सभी एकत्र होकर एक दिव्य परंपरा को जन्म देते हैं।

निष्कर्ष
महेश्वर का काशी विश्वनाथ मंदिर केवल एक पूजा स्थल नहीं, बल्कि श्रद्धा, परंपरा और आत्मिक ऊर्जा का स्रोत है। यहाँ की हर ईंट, हर घंटा, हर घंटी – हर साँस शिवमय है। यह महेश्वर की आत्मा है, भारत की आत्मा है।

इस पावन नगरी में आइए, महादेव के चरणों में स्वयं को अर्पित कीजिए – बिना किसी आडंबर, बिना किसी भेदभाव के।

क्योंकि यही है – गुप्तकाशी महेश्वर – जहाँ शिव स्वयं निवास करते हैं।

स्वाति सिंह राठौर साहिबा
संस्थापिका अनुरनन प्रतिध्वनि साहित्यिक

झालावाड़ स्कूल हादसे पर । मासूम जिन्दगी ।

यहाँ छत या दीवार नहीं गिरी
यहाँ हमारे भ्रष्ट तंत्र का आधार गिरा
लेट लतीफी का स्तम्भ गिरा है
मलबे दब गई मासूम जिन्दगी ।

कल देखते हैं
परसों देखते हैं

करते करते बीते कई दिन
पर सुनवाई नहीं की गई

मलबे में दब गई मासूम जिन्दगी ।

सरकारी मशीनरी और उनका यहाँ काम समझ से परे है
घटनाक्रम हों जाने

के बाद त्वरित प्रभाव बताते हैं

वहाँ भूल जाते हैं उन परिजनों का दुःख
जिनकी मालबे में दब गई मासूम जिन्दगी ।

संवेदनशील विभाग और
शिक्षा के भवन खंडहर

यूथी टूट रही दीवार
सात मासूमों की ले ली जिसने जान

मलबे में दब गई मासूम जिन्दगी ।।

स्वरचित रचना- रचनाकार हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

थाने से फरार यौन उत्पीड़न आरोपी आफताब के मौत के बाद झारखंड राजनीति भी गरमाई

आफताब की मौत भाजपा प्रायोजित, हिन्दू टाईगर फोर्स आतंकी संगठन घोषित हो :
मंत्री- इरफान अंसारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची, रामगढ़ जिले का यौन उत्पीड़न का आरोपी आफताब अंसारी 24 को पुलिस की हिरासत से भागने के बाद 26 जुलाई की देर शाम दामोदर नदी के पास उसकी लाश मिलने से झारखंड राजनीति गरमा गई है। घटना को लेकर मंत्री इरफान अंसारी ने नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी पर जहाँ जोरदार हमला बोला वहीं एस पी ने संबंधित थाने के पुलिस कर्मियों को निर्लंबित कर लाईन हाजिर कर दिया है। रामगढ़ में आफताब अंसारी की संदिग्ध मृत्यु को राज्य सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने भाजपा प्रायोजित करार दिया है। उन्होंने कहा कि यह घटना संविधान, कानून और इंसानियत पर हमला है। आफताब को बजरंग दल के जवाब में पुलिस ने हिरासत में लिया और बाद में वह मृत पाया गया (उन्होंने इसे सोची-समझी साजिश बताया और कहा कि वे मौन नहीं रहेंगे, भाजपा

नेता बाबूलाल मरांडी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि उनके भड़काऊ ट्विटर ने नफरत का माहौल बनाया, जिसके परिणामस्वरूप यह हत्याकांड हुआ। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या झारखंड में अब बजरंग दल कानून चलाएगा? क्या पुलिस भाजपा के इशारों पर निर्दोषों की जान लेगी? उन्होंने हिंदू टाइगर फोर्स को आतंकी संगठन करार देते हुए इसपर तत्काल प्रतिबंध और इसके संस्थापक पर हत्या का मुकदमा दर्ज करने की मांग की।

उधर मामले पर रामगढ़ थाना से अफताब अंसारी के फरार होने पर एसपी ने रामगढ़ थाना प्रभारी प्रमोद कुमार सिंह को लाइन हाजिर करते हुए निर्लंबित कर दिया है। पतरातू एसडीपीओ के जांच प्रतिवेदन के आधार पर ओडी प्रभारी पुआनि सलीमुद्दीन खां, संतरी में तैनात, गृहक्षक अजय करमाली, निमाचंद महतो की गंभीर लापरवाही के कारण थाना परिसर से अभियुक्त के फरार होने की बात सामने आयी है। पुआनि सलीमुद्दीन खां को तत्काल प्रभाव से निर्लंबित कर दिया गया है। गृहक्षक अजय करमाली व निमाचंद महतो को रामगढ़ थाना से तत्काल प्रभाव से विधि-व्यवस्था ड्यूटी से



मुक्त कर दिया गया है। एसपी अजय कुमार ने रामगढ़ थाना में हुई घटना को लेकर प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि प्राथमिकी दर्ज होने के बाद अभियुक्त आफताब अंसारी को थाना लाया गया था। वह थाना परिसर से दामोदर नदी की ओर जाने वाले रास्ते से फरार हो गया था। यह गंभीर मामला है। इससे पुलिस की छवि धूमिल हुई है। मामले की जांच का आदेश अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी को दिया गया।

जांच के बाद थाना प्रभारी समेत पुलिसकर्मियों को निर्लंबित कर दिया गया। गौरतलब हो कि थाना में बंद आफताब अंसारी 24 जुलाई से गायब हो गया था। थाना परिसर से गायब होने की सूचना के बाद लोगों ने शनिवार दोपहर 12 बजे से थाना के समक्ष प्रदर्शन किया। आफताब की पत्नी सालीहा खातून पुलिस से पति को सामने लाने की मांग कर रही थी। लारी कला गांव से काफी संख्या में लोग थाना पहुंचे थे।

मौके पर कांग्रेस के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष शहजादा अनवर, कांग्रेस प्रवक्ता रियाज अंसारी, राजद जिलाध्यक्ष गुलजार अंसारी, राजद नेता शहिद सिंहकी, कांग्रेस जिलाध्यक्ष मुन्ना पासवान, कांग्रेस जिला कार्यकारी अध्यक्ष पंकज तिवारी, कांग्रेस प्रदेश महासचिव बलजीत सिंह बेदी, मुकेश यादव, झामुमो नेता मुमताज मंसूरी, नुरुल्लाह, सज्जाद खान, तारिक अनवर मौजूद थे।

मौका या अवसर हमारी जिंदगी में एक बहुत अहम किरदार अदा करता है ।

जैसे सूरज का निकलना हर रोज नए सिरे से होता है, वैसे ही मौके भी हर रोज आते हैं। अगर उन मौकों को पहचानने और उनका फायदा उठाने के लिए इंसान को हर वक्त तैयार और सतर्क रहना चाहिए। जैसे सूर्योदय देखने के लिए हमें जल्दी उठना पड़ता है, उसी तरह मौके पाने और उन्हें आजमाने के लिए भी हमें हर वक्त होशियार रहना चाहिए। अगर हम देर से जागते हैं या सुस्त रहते हैं तो सूरज की पहली किरण से महरूम रह जाते हैं, और वैसे ही अगर हम मौके के लिए तैयार नहीं होते, तो वो हाथ से निकल जाता है।

सूरज की पहली किरण हमें एक नया दिन देती है, और मौका हमें जिंदगी में नई राह पर आगे बढ़ने का चांस देता है। सूरज निकलने से जैसे दिन बदल जाता है, वैसे ही अच्छा मौका इंसान की पूरी जिंदगी बदल सकता है।

सूरज की रौशनी हमें सोखने का मौका देती है, और मौके भी हमें जिंदगी में नया

तजुर्बा और सीख हासिल करने का रास्ता दिखाते हैं।

जो लोग मौके को पहचानकर उसका सही इस्तेमाल करते हैं, वो तरक्की और कामयाबी की तरफ आगे बढ़ते हैं। मौका इंसान को जिंदगी में आगे बढ़ने, कुछ नया सीखने और अपनी हैसियत को बेहतर बनाने का जरिया है। मौकों को पहचानो, उनके लिए हर वक्त तैयार रहो।

अपने आसपास के मौकों को देखो और उन्हें हासिल करने की कोशिश करो। नया सीखने के लिए दिल बड़ा रखो और ज़रूर दिखाओ। मौकों का फायदा उठाकर अपने मंजिल की तरफ बढ़ो।

मौकों की अहमियत को समझो और उन्हें खोने से बचो – ताकि अपनी जिंदगी बेहतर बना सको।

ये बातें बहुत हौसला देने वाली हैं। मौका पहचानकर उसका सही फायदा उठाओ, अपनी जिंदगी में तरक्की और बेहتری लाओ।

डॉ. मुस्ताक अहमद शाह

बारिशों की बूंदों से लिपट कर फिर बहुत रोया

दर्द दिल है किस तरह अब
छुपाऊं सावन में,
तुम वयू नहीं आये कैसे
मुस्कुराऊं सावन में,
लम्हे रह रह के सताते हैं,
रास्ते उदास हैं सारे,
बारिशों की बूंदों हैं, कैसे
भीग जाऊं सावन में,
वादे जो किये थे, भुलाना,
उन्हें मुमकिन है कहां,
तुम न आये तो क्या मैं भी
रूठ जाऊं सावन में,
दिल टूटेगा आएगी कयामत
शाम ए फुरकत है,
आओ न बैठेंगे दिल की बातें

हैं हसीन सावन में,
हाथ दिल पे रखो धड़कनों
को मेरी समझो तो,
बस दो पल की ही इनायत,
हो जाय सावन में,
बारिशों की बूंदों से लिपट
कर फिर बहुत रोया,
आज मैं तन्हा हूँ याद आगई
तेरी आज सावन में,
दूर हो लेकिन करीब दिलके
तुम्हें मैं रखता हूँ
बढ़ गई और मुहब्बत देख
मुश्ताक आके सावन में,
डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
'सहज' हरदा मध्यप्रदेश ।

आगामी उपराष्ट्रपति चुनावों में बीजेपी उम्मीदवार का विरोध करेगा बिजेड़ी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : आगामी

उपराष्ट्रपति चुनावों को लेकर जहाँ राष्ट्रीय राजनीति गरमा रही है, वहीं राज्य की राजनीति भी गरमा गई है। चर्चा है कि अगला उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार भाजपा से होगा। इस बीच, जहाँ विपक्षी दल इंडिया मेंटर विरोध में उतर आया है, वहीं ओडिशा की मुख्य विपक्षी पार्टी बीजेडी ने भी इस संबंध में एक अहम फैसला लिया है। इंडिया मेंट ने उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का विरोध करने का फैसला किया है। बीजद समन्वय समिति के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ उपाध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्रा की अध्यक्षता में शनिवार को शंख भवन में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। बैठक में वरिष्ठ नेता संजय दासबर्मा, प्रताप जेना, अतनु



सव्यसाची नायक, अरुण साहू और बाँबी दास मौजूद थे। बैठक में उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए पार्टी की रणनीति, नौ जिलों में रिक्त जिला अध्यक्षों के पदों को भरने, कॉलेज चुनावों के लिए परिसर कार्यक्रमों और थान खरीद में अनिश्चितताओं के विरोध आदि पर चर्चा हुई।

वरिष्ठ बीजद विधायक प्रताप केशरी देव ने बीजेपी उम्मीदवार का विरोध करने का पुरजोर प्रस्ताव रखा था। अधिकांश नेताओं का मानना था कि राजग का समर्थन करने से बीजद को राजनीतिक रूप से नुकसान होगा और जनता के बीच पार्टी की विश्वसनीयता कम होगी।

इस निर्णय से बीजद सुप्रीमो नवीन पटनायक को अवगत करा दिया गया है, हालाँकि वे बैठक में मौजूद नहीं थे। हालाँकि, नवीन का अंतिम निर्णय अभी स्पष्ट नहीं है।

जानकारी के अनुसार, उपराष्ट्रपति चुनाव में केवल लोकसभा और राज्यसभा के सांसद ही मतदान कर सकते हैं। बीजद का लोकसभा में कोई प्रतिनिधि नहीं है, जबकि राज्यसभा में उसके केवल सात सांसद हैं। चूँकि एनडीए के पास 426 सांसद हैं (लोकसभा में 293 और राज्यसभा में 133), इसलिए उसे आवश्यक 396 वोट आसानी से मिल जाएँगे। चूँकि मतदान गुप्त मतदान के माध्यम से हो रहा है, इसलिए कोई पार्टी विधि जारी नहीं किया जा सकता, जिससे सांसदों को स्वतंत्र रूप से मतदान करने का अवसर मिलता है।



सिकंदराबाद पोस्ट मार्केट में आर एस ज्वैलर्स के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्थित प्रबंधक हेमराम सैणचा, हजारीलाल हाम्बड़, नरेश काग, श्रवण हाम्बड़, महेंद्र हाम्बड़ व सुरेश सैणचा के साथ ढगलाराम सेपटा, चन्द्रप्रकाश गेहलोत, बाबूलाल मुलेवा, नेमाराम काग, घनश्याम बर्फा, आनन्द राठौड़, रमेश सिन्दड, जगदीश सीरवी व अन्य

महिला मण्डली द्वारा भजन प्रस्तुत के बाद प्रसादी का लाभ लिया गया



जगदीश सीरवी
सीरवी समाज मित्र मंडल हैदराबाद गाँव निम्बली (मंडा) श्रावण सैर श्रीराम लिंगेश्वर स्वामी किसरागुटा में महिला मण्डली द्वारा भजन प्रस्तुत के बाद प्रसादी का लाभ लिया गया। इस अवसर पर सीरवी समाज बालाजी नगर वडेर अध्यक्ष जयराम पंवार, उपाध्यक्ष नारायणलाल बर्फा, मांगीलाल सोलंकी, नरेश सोलंकी, दिनेश सोलंकी (डूंगाराम), कुनाराम, खुमाराम सोलंकी, नेमाराम सोलंकी, रताराम सोलंकी, प्रताप सोलंकी, उत्तम काग, मूलाराम सोयल, बाबूलाल मुलेवा, लखाराम गहलोत, ओगडराम सैणचा, तुलसाराम राठौड़, लखाराम सोलंकी, चौथाराम भायल, दुर्गाराम परिहार, रमेश भायल सहित बड़ी संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे।